॥ ओ३म् ॥

तर्क इस्लाम

—महाशय धर्मपाल बी० ए०
(भू०पू० मौलवी अब्दुल गफ़ूर)

॥ ओ३म् ॥

तर्क इस्लाम

जिसे

महाशय धर्मपाल बी० ए०

भूतपूर्वं मौलवी अब्दुल गफूर बी० ए० हैडमास्टर इस्लामियाँ स्कूल, गुजरांवाला ने ता० १४ जून १९०६ ई० को गुजरांवाला आर्यसमाज में वैदिक धर्म में दीक्षित होने के समय यह व्याख्यान दिया था।

प्रकाशक :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान

नई दिल्ली-२

मुद्रक :

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली-२

तृतीयवार २०००] नवम्बर १९९३ [मूल्य पांच रुपये

दो शब्द

आर्य जनता के हाथों में तर्क इस्लाम नामक इस लघु पुस्तक को सौपते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। १९३५ में प्रकाशित इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण की एक प्रति आर्य समाज के स्वनाम धन्य विद्वान् पं० क्षितीश जी वेदालंकार ने अपने दिवंगत होने से कुछ समय पूर्व मुझे इस आग्रह के साथ दी थी कि मैं, सार्वदेशिक सभा की ओर से उसे प्रकाशित कराकर आर्य जनता में इसे प्रचारित कराऊं।

इस्लामियां स्कूल गुजरांवाला (वर्तमान पाकिस्तान) के हैड मास्टर मौलवी अब्दुल गफूर ने सन् १९०६ में स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा आर्य समाज गुजरांवाला में ली थी और उनका नाम महाशय धर्मपाल रखा गया था। अपने दीक्षा समारोह में महाशय धर्मपाल जी ने जो ऐतिहासिक व्याख्यान कुर्आन और इस्लाम की मान्यताओं पर दिया था, उसी का संग्रह "तर्क इस्लाम" नामक इस पुस्तक में किया गया है। उन्होंने स्पष्ट रूप में कहा था कुर्आन कदापि ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता है बल्कि यथार्थ ईश्वरीय विद्या का सूर्य वेद वाणी और वेदों का ज्ञान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद ज्ञान के प्रचार से आर्यावर्त निवासियों को ही नहीं अपितु अमेरिका में बैठे एनडो जैक्सन को भी चकित कर दिया था।

पुस्तक अत्यन्त तर्क पूर्ण है। आशा है आर्य जनता और पाठक महानुभावों को बहुत उपयोगी लगेगी।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

२० नवम्बर १९९३

॥ ओ३म् ॥

तर्क इस्लाम

उपस्थित सभ्यगण ! मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि आप कतिपय महाशयों ने तो इस नगर से और कतिपय महानुभावों ने दूर देशस्थ नगरों से इस ग्रीष्म ऋतु के कष्ट को सहन करके इस उत्सव को अपने आगमन से सुशोभित किया है।

इस सामान्य धन्यवाद के अतिरिक्त मैं साधारणतया आर्यसमाज को और विशेषतया गुजरानवाला समाज को बधाई देता हूं और आनन्द हुलास आच्छादित करता हूं कि वह आज एक श्रेष्ठ और निपट निराले कार्य के करने के अर्थ उद्यत है और आस-पास के विपक्षी और विप्रलम्भ तथा उन्हनों को किञ्चित ध्यान में न लाकर एक जन्म के मुसलमान (यवन) को अपने साथ मिला रहा है।

आर्य समाज गुजरानवालाको मैं और भी आनन्द व हर्ष के साथ स्मरण करता हूं कि वह इस कार्य में असीम दृढ़ रहा, यद्यपि विपक्षियों की ओर से आर्य समाज गुजरानवाला के पास बहुधा पत्र आते रहे कि वह "आस्तीन का सांप" है, इससे बचकर रहना। कपटी और विश्वासघाती पुरुष है, धोखेमें मत आजाना। यह भेद लेने के लिये आया है और मुसलमानों (यवनों) की ओर से है! परन्तु है प्रशसनीय उनका साहस कि उन्होंने असम्बद्ध प्रलाप करने वालों का कुछ ध्यान न करके इस कार्य को सर्व प्रकार परिणाम तक पहुंचाने की तत्परता प्रकट की।

हां जहां आर्य समाज के सभासदों को इस प्रकार असन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया गया, वहां मुझे भी बहुधा मुसलमान लोगों ने आर्यसमाज की ओर से असन्तुष्ट करने में कुछ शेष नहीं छोड़ा। कोई नियोग का विवाद सम्मिलित करने लगा, कोई आवागमन का विषय प्रविष्ट करने लगा और अन्य बातें सुनाने लगा और जहां तक होसका, अन्य अनर्गल लेखों से मेरे पगों को कम्पायमान करना चाहा। परन्तु उन सत्य से बहिर्मुखों को यह पता नहीं था कि जब किसी के हृदय पर सचाई की मोहर अंकित हो जाती है तो वह असंगत प्रलाप और आस-पास के लोगों की आयं बायं शायं से मिट नहीं सकती है, न उसको लेख दूर कर सकता है न वाद-विवाद, न धमकी न डर न तलवार, न कृपाण न कोई लालसा आदि ! सचाई शिर के साथ जाती है। शरीर छेदन किया जा सकता है किन्तु उस सत्य विश्वास के चिह्न को हम छेदन नहीं कर सकते ! अतएव बड़े धन्यवाद का स्थल है कि आज हम निर्विघ्न रूप से यहां पर एकत्र होकर इस श्रेष्ठ रीति (संस्कार) को पूरा कर रहे हैं। जो सचाई केवल (सत्यता) सचाई पर निर्भर है जिसकी पेंदी में न कोई लोभ है, न डर न कोई बहकावट मौजूद है न फुसलाहट, न तलवार मौजूद है किन्तु सत्यता को ग्रहण करके और सत्यता पर मोहित होकर मैं आज एक मत को छोड़कर दूसरे धर्म में सम्मिलित होता हूं ! मैंने यवन मत (मुसलमानी मजहब) को क्यों छोड़ा ? इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक मनुष्य नहीं दे सकता ! सम्भव है कि वह ओर मत (धर्म) परिवर्तन की घटना सुनकर वह अपने हृदय में कोई उलटा उत्तर प्राप्त कर लें और उलटी रीति पर अपने मन में शान्ति प्राप्ति कर लें।

किन्तु इनको विश्वास करना चाहिये कि मैंने उन कारणों

को लेकर मत परिवर्तन नहीं किया कि जिन कारणों को हम बहुधा अपने आस पास के मत परिवर्तन कर्त्ताओं को बर्ताव में लाते हुए पाते हैं उदाहरणतया—

(१) बहुत से लोग धन और रुपये के अर्थ मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(२) बहुत से जन किसी स्वरूपवती स्त्री के पीछे धर्म छोड़ बैठते हैं, और बहुधा दृष्टान्त देखे सुने जाते हैं कि अमुक पुरुष अमुक कंचनी के हेतु अमुक हो गया इत्यादि-इत्यादि।

(३) बहुत से पुरुष नौकरी व किसी पद के लालच में आकर मत परिवर्तन करते हैं।

(४) बहुत से जन किसी भय से अथवा धमकी से मत परिवर्तन करते हैं। हां अनेक ने तलवार के भय से धर्म परिवर्तन किया है।

(५) अनेक पुरुष किसी मत और सम्प्रदायीय सभा (सोसायटी) का मत केवल इस कारण स्वीकार कर लेते हैं कि सोशल (सभा सम्बन्धी) और पोलेटीकल (राज्यकीय) अधिकार हमें मिल जावेंगे।

(६) बहुत से लोग दूसरे मत में धनी और पढ़े लिखे पुरुषों की एक बहुत बड़ी संख्या देखकर मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(७) बहुत से मनुष्य अपनी बिरादरी या मा बाप को धमकाने के लिये किसी अनबन पर मत परिवर्तन कर बैठते हैं।

(८) अनेक जन अपने सहधर्मियों की ओर से कोई चोट खाकर उनको अपने मत परिवर्तन से धमकाने के लिये ही बिना सोचे समझे धर्म परित्याग कर बैठते हैं। और बहुधा धोखे से ही

धर्म छोड़ बैठते हैं परन्तु मैंने जो इस्लाम परित्याग किया है वह पूर्वोक्त कारणों में से किसी कारण को ग्रहण करके नहीं किया।

आर्यसमाज की ओर से मुझे धन, द्रव्य, स्त्री पद या किसी अन्य अधिकार का लालच नहीं दिया गया, और यदि सच पूछो तो आर्यसमाज के पास इस प्रकार लालच ही कहां है? यदि कल्पना करो कि कोई हो भी तो क्या ऋषियों की सन्तान किसी लालच या धोखे से एक पुरुष को अपने साथ मिलाकर यह समझ सकता है कि हमने धर्म का काम किया! किन्तु महान् अधर्म और महान् पाप का काम है तो फिर क्या आर्यसमाज ने मुझे बहका लिया। प्रथम तो आर्यसमाज का काम कतिपय मतों के सदृश बहकाकर संख्या बढ़ाना कदापि नहीं है कदाचित् यदि हम यह कल्पना भी कर लें कि आर्यसमाज बहका लेता है तो किसको? क्या एक यूनीवर्सीटी (विश्व विद्यालय) के डिगरी प्राप्त को, एक हाई स्कूल के हेडमास्टर को, और फिर एक मुसलमान को (ई ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूं)?—ऐसा विचार करना दुस्तर वरन उनमत्तता है।

आर्यसमाज के किसी आदमी ने मुझे नहीं बहकाया, आर्यसमाज के किसी आदमी ने मुझे नहीं खींचा, किन्तु उस सत्यता ने मुझे आकर्षित किया जो भविष्य में मेरे समान बहुतों को खींचेगी, वह सत्यता क्या है? वह वैदिक धर्म की जिसके चिह्न मैं यहां अपने आस-पास कहीं-कहीं द्वार और भीतों पर देख रहा हूं? इस सत्यता के जल ने मेरे पिपासाकुलित हृदय को आद्रित किया जब कि कुरान के मारुस्थली तट मेरी पिपासा की शान्ति न कर सके जब कुरान की बुद्धि विरुद्ध बातें मेरे डमाडोल और क्लेशित मस्तक को कुछ सन्तोष नहीं दे सकीं! कुरान के बहुत से जांगल्य और दया रहित प्रकरण मेरे नम्र

हृदय को सन्तुष्ट न कर सके, जब कुरान की नोच कक्षा की शिक्षा मेरे उच्च कक्षा के विचारों का साथ न दे सकी, जब कुरान के मानने वालों का नैष्ठिक जीवन (अमली जिन्दगी) मुझ पर आरोग्यप्रद आत्मह्लादिक प्रभाव न डाल सकी, जब मैं इस अन्धकार आच्छादित वायु चक्र में इधर उधर हाथ मारकर खेदित और श्रमाकुलित हो रहा था तो मुझे अन्दर से निकालने के निमित्त वैदिक शिक्षा के प्रकाशित भुवन भास्कर की रश्मियों ने मेरे पथ को प्रकाशित किया, और मुझे अन्ध कूप से निकाल कर प्रकाशमय भूमि में पहुंचाया। मैं अरब के मरुस्थलों से निकल कर गंगा और यमुना के तटों पर आया, जहां वेदोक्त शिक्षा का वह मिष्टाम्बु (शरबत) मिला, जिसने मेरी हार्दिक पिपासा को शान्त कर दिया। मेरे हृदय और मस्तिष्क को शान्ति प्राप्त हुई।

मुझे पुराने ऋषियों और मुनियों की सन्तानों में से कुछ ऐसे चेहरे दिखाई दिये कि जिनके पास जाने से और जिनके समीप वर्षों तक रहने से मुझे विश्वास हो गया कि सचमुच चारों ओर अरबी मरुस्थलो और अरब के मरुस्थलीय तट से शुष्क हुये मेरे हृदय और मस्तिष्क ही नहीं है, वरन इस समय भी बहुत से हृदय हैं जो अद्यावधि उष्ण वायु के झोकों से रक्षित हैं और आत्मिक प्रभावों को हवन की सुगन्धि के समान अब भी अपने आस-पास इस प्रकार फैला रहे हैं कि जिस प्रकार सहस्रों वर्ष पूर्व गंगा और यमुना के तटों पर बैठे हुए ऋषियों, हिमालय पर्वत को लहलहाती हुई शिखरों पर विराजमान मुनियों के, आत्मविवेक में लवलीन हृदयों से वह आत्मिक वायु बहती थी कि जिसके झोंके सहस्रों वर्ष पश्चात् भी योरूप और अमेरिका के जाग्रत मस्तिष्कों और आत्मविवेक जिज्ञासुओं को अद्यावधि

सुगन्धित कर रहे हैं, और भविष्यत् में इससे भी अधिक करेंगे! यह सुगन्धित झोंके कहां से और किसके लिये ? वेदों की शिक्षा से सत्यता पर मोहित और आत्मविवेक के जिज्ञासुओं के लिये ! भला क्या सम्भव हो सकता है कि एक ईर्षा रहित हृदय को चमेली के नव विकसित पुष्पों की सुगन्धि का झोंका सन्तुष्ट कर दे और वह फिर भी अपने हाथ से वर्षों से ग्रहण किये हुये एक जर-जर चर्म वस्त्र को न गिरावें, क्या सम्भव हो सकता है कि एक पुरुष को हरित तृण संकुलित भूमि दृष्टि पड़ जावे और वह फिर मरुस्थलीय उष्ण वायु के भोकों से बचने के लिये इस हरित तृण संकुलित भूमि की ओर न भाग आवे ! नहीं कदापि नहीं! प्रत्येक पुरुष मरुस्थली की अपेक्षा हरित तृण संकुलित भूमि पर अधिक रीझता है। प्रत्येक मनुष्य तिक्त जल की अपेक्षा मिष्ठाम्बुकी अधिक आकांक्षा करता है, प्रत्येक पुरुष जीर्ण की अपेक्षा नवीन सुखदका अभिरुचिक है उस दशा में कि वह सत्य विवेक की आंख से ईर्षा की ऐनक (उपनयन) को उतारकर सत्य को सत्य, हरित का हरित और पीत को पीत ही देखने की योग्यता रखता हो ! मैंने ईर्षा के प्राणान्तक रोग से आरोग्यता प्राप्त की। मत द्वेष के काले पर्दे मेरी आंखों के सामने से दूर हुए। ईर्षा की चतुर्दिक भीत से मेरा शिर बाहर निकला, तो क्या देखा कि जिस गड्ढे में मैं पड़ा हुआ हूं वह मेंढ़क के कूप की समान परिमित और संकीर्ण तथा तिमिरमय है। जब कि इससे बाहर (सत्यता सचाई का समुद्र अपरिमित और वैदिक प्रकाश से प्रकाशित जीवन नौका को मातृवत गोद से लगाये हुए उस किनारे की ओर ले जा रहा है कि जो जीवनका उद्देश्य है। यदि मैं अपने कतिपय सहधर्मियों की समान ईर्षा का सेवक और सत्य तथा सचाई से घृणा करनें वाला होता तो मैं कदापि इ

संकीर्ण और अन्धेरे कूप में से न निकल सकता, और मुझे वह प्रकाश न प्राप्त होता कि जिसको मैं प्रसन्नता पूर्वक वर्त रहा हूं ! पर मेरे लिये आवश्यकीय हुआ कि मैं प्रकाश और अन्धेरे का निर्णय करूं, और उनमें से श्रेष्ठ को ग्रहण करूं। मैंने सत्यता को दृष्टि में रखकर ईर्षा से रहित होकर भिन्न-भिन्न मतों का (Comparative study) तुलनामय अध्ययन आरम्भ किया। एक ओर कुरान है तो दूसरी ओर बाइबिल, एक ओर बुद्ध मत की पुस्तकें हैं तो दूसरी ओर वैदिक लिटरेचर (ग्रन्थ) ! मैंने कुरान और इस्लाम (यवन मत) को सबसे निकृष्ट कक्षा में पाया बाइबिल और ईसाई मत को इससे और कई कक्षा ऊपर और श्रेष्ठ पाया। किन्तु बौध मत को ईसाई मत से उच्च पाया, मैं ईसाई मत को मान स्वीकार कर लेता, यदि ईसाईपन की दो तसलीसे में कितनी ही एक अनर्गल बातों सहित मेरे मार्ग में ,रोक न बनती। अर्थात् प्रथम साधारण तसलीस (अर्थात् पिता पुत्र तथा पवित्रात्मा तीनों को ईश्वर मानना) द्वितीय विशेष तसलीस तीन मुख्य भारी पाप के कामों की अर्थात् प्रकृतत्व, (मादयित) मांस भक्षण और मद्यपान। इससे आगे कदाचित् मैं बौद्ध मत को स्वीकार करता, यदि मुझे बुद्धमत से अधिक प्रकाशमान वरन बुद्ध मत का उद्‌गमस्थान तथा निकास स्थान वैदिक धर्म न मिल गया होता ! निदान मेरे दु:खित हृदय ने मुझे विवश किया कि हर प्रकार का भय और डर त्याग कर प्रत्येक भांति के उलहाने और विपालम्भ दृष्टि वाह्य करके, इस धर्म की पताका के नीचे आ जाऊं, इस सभा का सभासद् बन जाऊं कि जिसके प्लेटफार्म पर खड़े होने का मैं आज अभिमान करता हूं। मुझे यह मान प्राप्त न होता यदि आर्य्य समाज जीवित और जागृत, सत्यता पर निर्भर और सत्यता (सचाई)

पर मोहित होने वाली सुसाइटी (सभा) होकर सत्यता के नियमों का बिना रोक टोक के प्रचार करने वाली और किसी प्रकार की विरुद्धता का ध्यान चित्त में लाकर भयभीत न होने वाली सभा न होती। मैं फिर कहता हूं कि आर्य समाज के साहस को धन्यवाद है! वेद की पवित्र शिक्षा ने भारतवर्ष में ऐसी सुसाइटी और ऐसे पुरुष पैदा कर दिये हैं कि जो भले प्रकार जानते हैं कि सचाई (सत्यविवेक) एक ही है! आज से पचास वर्ष पूर्व एक जन्म के मुसलमान पुरुष के पगों से कदाचित यह मन्दिर और प्लेटफार्म अपवित्र हो गया हुआ समझा जाता। परन्तु आज वह दशा नहीं है। वेद की शिक्षा ने यह सिद्धि कर दिया है जिस प्रकार एक सदाचारी जन्म का ब्राह्मण वेद मन्त्रों और उनकी सत्यता का सर्व साधारण के सम्मुख प्रकाशित करने का अधिकारी है, वैसे ही एक सदाचारी जन्म का मुसलमान भी उसी मन्दिर में उसी प्लेटफार्म पर खड़ा होकर वेद के सत्यज्ञान को प्राप्त करके अनेक वेदके जिज्ञासुओं के कानों तक अपनी ध्वनि पहुंचा सकता है। निस्सन्देह वेद की पवित्र शिक्षा का भास्कर ज्यों-ज्यों अपना प्रकाश फैलाता जायेगा त्यों-त्यों असभ्यता और अन्धकार दूर होता जायेगा। और असंख्य जो पगडंडियों पर पड़े हुए हैं इस प्रकाश के होने से सुख के मार्ग (विस्तीर्ण पथ) को ग्रहण कर लेंगे। निदान मैं आज अपनी मुसलमानी पगडंडी को त्याग कर वैदिक धर्म के राज्य पथ (शाहराह) में पग धरता हूं। परन्तु प्रथम इसके कि मैं बैठ जाऊं मैं उचित समझता हूं, कि उपस्थित समुदाय के सम्मुख कुछ कारण कुरान की शिक्षा के विषय में वर्णन करूं कि जिनके कारण मैंने "कुरानो इस्लाम" को अपने हृदय और मस्तिष्क के विरुद्ध पाकर त्याग दिया।

मैंने बहुत काल तक कुरान की छान-बीन की किन्तु मुझे

मोती और मणियों के स्थान में पत्थर और कंकर ही मिले मैं कह सकता हूं कि आत्मज्ञान का प्यासा जो कुरान की जांगल्य झलक के पीछे भागता है वह उष्ण वायु के झोकों से जो अरब के मरुस्थलो सदृश अरबी कुरान में चल रहे हैं अपनी आत्मा को हानि पहुंचा लेता है। माना कि वह इससे बेसुधि क्यों न रहे। क्योंकि आत्मज्ञान कुरान से ध्रुव तारे और पृथ्वी के परस्पर की दूरी से कुछ कम नहीं है। यदि मैं कुरान से आत्मज्ञान ढूंढ़ना चाहूं तो कदाचित् मेरा यह काम इन्द्रायन की बेलिसे मीठे खर्बूजों और नीम के पेड़ से मीठे आम्रफलों की लालसा रखनें से कुछ कम असंगत न होगा। मैंने अपने अनुभव से कुरान और आत्मज्ञान को दो विरुद्ध दशाओं में चलते देखा। प्रथम की गति दक्षिण की ओर द्वितीय की उत्तर की ओर! और वास्तव में जिस शिक्षा को ग्रहण करके महमूद जैसा पुरुष (अमीनुलमिल्लता) मत का पेशवा और औरंगजेब जैसा पुरुष मुहीउद्दीन अर्थात् मत जीवक बन गये। वह शिक्षा आत्म-ज्ञान को बायें कर्ण से पकड़ कर हृदयरूपी मन्दिर से बाहर निकाल देती है। मैं स्वीकार करता हूं कि कुरान परमेश्वर को आकाश और पृथ्वी का प्रकाशक बताता है, परन्तु शोक का स्थल है, इस प्रकाश पर जो सहस्रों स्याही के बोरे भर-भर कर डाले गये हैं, उनसे परमेश्वर का प्रकाशमय चेहरा तवे से भी अधिक काला कर दिया गया है। संसार की उत्पत्ति विषय में जो शिक्षा है, उसने बाईबुल की गप्पों को भी मात कर दिया है। कुरान में जो कयामत (प्रलय) का चित्र (नकशा) जमाया गया है। वह निपट निराले ढंग का है। बहिश्त (स्वर्ग के) शराब व कबाब, हूर व गिलमां सोने चांदी के आभूषणों से परमेश्वर प्रत्येक यती और पढ़े लिखे मनुष्य को बचावे, पशुओं की

विकलता (बिलबिलाहट) कि जिनके रुधिर से परमेश्वर को प्रसन्नता और स्वर्ग की प्राप्ति समझी जाती है, असभ्यता के इच्छुकों के अतिरिक्त पत्थर को भी कम्पायमान करने वाली है। सृष्टि क्रम विरुद्ध किस्से कहानियों और ढकोसलों से कुरान को एक साधारण प्रमाणिक पुस्तक की कक्षा से भी नीचे गिरा दिया है।

यवन मत से भिन्न पुरुषों को काफिर (अधर्मी) और मुशरिक● कहकर उनको अपवित्र समझने और उनसे दूर रहने की दीक्षा ने सबसे मेल रखने के नियम की जड़ में दीमक लगा दी है। स्त्री को केवल खेती और मिलकियत (पूंजी) समझने के नियम ने सच्चे स्त्री और पति बनने के स्थान में परस्पर स्वामी और सेवक के सम्बन्ध को भी लज्जित कर दिया है। मैं साहस के साथ कहता हूं कि कुरानी शिक्षा ने कुरान को ईश्वरीय पुस्तक की पदवी से गिरा कर एक सभ्य पुरुष की साधारण पुस्तक से भी नीचे गिरा दिया है और कुरान के दुर्ग (किले) को कुरान की ही बारूद ने उड़ा दिया है, आज कल के बहुधा नवीन प्रकाश से युक्त मुसलमान (यवन) मत के रक्षक इस किले को बचाने के निमित्त अपने सर्व बल से प्रयत्न कर रहे हैं और इस पर नवीन खोल चढ़ा रहे हैं परन्तु साइन्स (प्राकृत विद्या) के नियमों के सामने जीर्ण दुर्ग (बोदे किले) धड़ाम-धड़ाम गिर रहे हैं।

उपस्थित सभ्यगण! कुरानी शिक्षा क्यों समीक्षा (एतराज) के योग्य है? इसके निमित्त मैं कुछ बातें आपके सन्मुख प्रविष्ट करता हूं।

● वह पुरुष जो केवल ईश्वर को न मानकर उसके साथ किसी और को भी सम्मिलित करता है।

प्रथम—परमेश्वर विषय में कुरान की शिक्षा निपट भद्दी और अत्यन्त समीक्षा (एतराज) किये जाने योग्य है। परमेश्वर को एक साधारण पुरुष कल्पना करके उसमें कुछ अच्छे गुणों के अतिरिक्त विशेषतया ऐसे गुण भी दिखलाये गये हैं जो किसी नीच कक्षा के पुरुष में पाये जाते हैं, मैं यहां पर उदाहरण की भांति कुछ बातें प्रकट करता हूं।

कुरान की शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा मक्कार और फरेबी है देखिये:—

"मकर किया काफिरों से और मकर किया खुदा से, और खुदा बेहतर है—मकर करने वालों में से" (सी० ३ अलउमरा आयत ५३) और इसी प्रकार सीपारा ९ सूरत इन्फाल आयत ३० और सीपारा ३० सूरत उल्तारक आयत १५ व १६ और अन्य बहुत से स्थानों में भी खुदा (परमेश्वर) को मक्कारों का मक्कार और फरेबियों का फरेबी लिखा गया है। कतिपय भाष्यकारों (मुफसिरों) ने जब देखा कि खुदा पर दोषारोपण होता है तो उन्होंने (मकर अल्लाही) के अर्थ "खुदा ने इन लोगों की मकर की खूब सजा दी" कर दिये परन्तु यह अत्यन्त अशुद्ध है।

सजा (दण्ड) और जजा "पारितोषि' के अर्थ 'मकर अल्ला ही' में से कदापि नहीं निकलते। यदि अरबी व्याकरण के नियम से भी देखा जावे तो भी 'अल्ला ही' के अर्थ सजा 'दण्ड' नहीं हो सकते।

मक्र सामान्य भूत है इसके रूप यों होंगे।

	एक वचन	दो वचन	बहु वचन
पुल्लिग अन्य पुरुष	उस एक आदमी ने अरेब किया।	उन दो आदमियों ने फरेब किया।	उन बहुत आदमियों ने फरेब किया।
स्त्रीलिंग अन्य पुरुष	उस एक स्त्री ने फरेब किया।	उन दो स्त्रियों ने फरेब किया।	उन बहुत स्त्रियों ने फरेब किया।
पुल्लिग मध्यम पुरुष	तुमने फरेब किया।	तुम दोनों ने फरेब किया।	तुम सबने फरेब किया।
स्त्रीलिंग मध्यम पुरुष	उस स्त्री ने फरेब किया।	तुम दोनों स्त्रियों ने फरेब किया।	तुम सब स्त्रियों ने फरेब किया।
पुल्लिग व स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष	मैंने फरेब किया।		हमने फरेब किया।

क्या यदि "मक्र (कपट) के अर्थ बहुवचन अन्य पुरुष पुल्लिग में उन लोगों ने फरेब किया" हुये तो एक वचन अन्य पुरुष पुल्लिग में "उस आदमी ने उन लोगों को मक्र की खूब सजा दी" होंगे ? कदापि नहीं। हां यदि "मक्र" के अर्थ "फरेब की सजा देने के लें" तो फिर हमें अन्य पुरुष बहुवचन में भी वही लेने पड़ेंगे अर्थात् "उन आदमियों ने खूब फरेब की सजा दी" और खुदा ने भी उनको खूब फरेब की सजा दी" [एक वचन

में] जो निपट अनुचित और बुद्धि वाह्य हैं। क्योंकि इससे यह पता नहीं लग सकता कि उन आदमियों ने किसको फरेब की सजा दी? क्या पैगम्बर ने प्रथम उनसे फरेब किया तो उन्होंने फरेब की सजा दी या क्या? सारांश यह है कि मक्र (कपट)" के अर्थ फरेब की सजा देने के कदापि नहीं हो सकते। मुफसिर (भाष्यकार) लोग जान-बूझकर अशुद्ध अर्थ कर रहे हैं। इसी प्रकार कितने ही और भी शब्द हैं कि जिनके अशुद्ध अर्थ किये हैं। केवल इस हेतु से कि परमेश्वर (खुदा) पर जो मक्कार (कपटी) फरेबी (छली) मखोलिया (मसखरा)और लड़ाका आदि दोष लगाये हैं वह धुल जावें परन्तु अशुद्ध अर्थ करने से दोष नहीं धुला करता है।

तफसीरे (कुरान के भाष्य) बहुधा विश्वास योग्य नहीं हैं। उनके ऐतिहासिक वृत्तों को किन्हीं अंशों में सत्य माना जा सकता है यद्यपि इस विषय में भी कुरान के भाष्यकारों ने बहुधा स्थलों पर बड़ी-बड़ी अशुद्धियां की हैं।

क्योंकि मेरा अभिप्राय यहां पर कुरान का कोई नया भाष्य करके आप महाशयों को दिखलाना नहीं है। अतएव मैं प्रत्येक विषय पर ब्योरेवार वाद-विवाद से व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहता हूं भविष्य विषयों में केवल कुरान का प्रमाण मात्र देना ही उचित समझता हूं। यदि किसी को सन्देह हो तो वह कुरान से देख सकता है।

सी० ३ सू० उमरान् अ० ५३॥

(२) कुरान की यह शिक्षा है कि "खुदा (परमेश्वर) फरेब करता है और धोखेबाजी करता है।" किसी भलेमानस आदमी पर जो सचमुच फरेबी न हो यदि यह दोष लगाया जावे तो

पीछे पड़ जायेगा और अदालत तक पहुंचेगा। परन्तु परमेश्वर पर फरेब बाजी का दोषारोषण करना किसी बड़े ही साहसी मनुष्य का काम हो सकता है। शोक कि मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता।

—सी० ९ सू० अनफाल अ० ३० ॥

(३) कुरान की यह शिक्षा है कि "खुदा [परमेश्वर] आत्मिक रोगियों के आत्मिक रोगों को जान बूझकर बढ़ाता है और फिर ऊपर से अजाब दुःख भी देता है।" निस्सन्देह यह बहुत बड़ी निर्दयता और अन्याय है कोई बुद्धिमान पढ़ा लिखा ईश्वर को ऐसा अन्यायी और निर्दई स्वीकार नहीं कर सकता है।

सी० १ सू० बकर आ० १० ॥

(४) कुरान की यह शिक्षा है कि "परमेश्वर बड़ा लड़ाका है" भला जब ईश्वर ही लड़ाका हो गया तो फिर पृथ्वी पर सम्मेलन और शांति कौन स्थिर कर सकता है। लड़ाका आदमी परमेश्वर को भी लड़ाका कह सकता है। परन्तु वह जो लड़ाई से घृणा करता है, वह परमेश्वर पर ऐसा भयानक दोष आरोपण नहीं कर सकता। उचित था कि कुरान में ईश्वर को इन बातों के साथ स्मरण न किया जाता। मुझे हार्दिक शोक है कि मैं कुरान की शिक्षा को नहीं मान सकता।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८४ ॥

(५) कुरान की यह शिक्षा है कि "परमेश्वर मनुष्यों में वैर डाल देता है, प्रलय के दिन तक परस्पर का द्वेष फैला देता है।" जिज्ञासु और ईश्वर प्रिय मनुष्यों के लिये इससे अधिक घृणित शिक्षा और क्या हो सकती है? कि जिस परमेश्वर को वह अपने जीवन का उद्देश्य और परम पिता समझता है उस पर ऐसे महान् और दोषयुक्त धब्बे लगाये जावें, यदि द्वेष

फैलाने वाले और वैर डालने वाले मनुष्य परमेश्मर को भी द्वेष फैलाने वाला तथा वैर डालने वाला समझें तो सम्भव है। परन्तु ईश्वर प्रिय, शुद्ध ईश्वर पर ऐसा दोषारोपण नहीं कर सकता।

सी० ६ सू० मायदा आ० १५ ॥

(६) कुरान की यह शिक्षा है कि "परमेश्वर न्यायकारी है परन्तु तोबाह (प्रायश्चित्त) स्वीकार कर लेता है और पाप (गुनाह) क्षमा कर देता है।" भला न्याय और क्षमा (मुआफी) का मेल कहां ? जहां मुआफी (क्षमा) आई न्याय दूर हुआ। संसार का सर्व शक्तिमान् महाराज जिसको चाहे छोड़ दे जिसको चाहे मार डाले ! परन्तु इससे वह न्यायकारी नहीं हो सकता ? ईश्वर विषय में यह शिक्षा महान् विवादास्पद है।

सी० २ सू० बकर आ० १६१ ॥

(७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा क्षमा करने वाला (गफ्फार) है परन्तु कुरान को पढ़ते जाओ और नर्क के मनुष्यों के विलाप पर ध्यान दो कि किस प्रकार चिल्ला रहे हैं? क्षमा मांग रहे हैं और पछतावा कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वर के कान बहरे हो गये हैं, कुछ नहीं सुनता। क्या परमेश्वर की क्षमा यदि कोई पदार्थ है तो प्रलय के दिन उड़ जायेगी ? और परमात्मा ढोठ हो जायेगा।

ऐ चक्षु तू रक्त के आंसू बहा कि खुदा के विषय में कुरान की शिक्षा कैसी भद्दी है। सी० ५ सू० नसाय आ० ५५।

(८) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा बुराई को पसन्द नहीं करता, परन्तु कितनी लज्जा की बात है कि उसको बदीका पैदा करने वाला माना गया है। नादान लोग तकदीर और तदबीर और आजमायश आदि का ढकोसला बीच में लाकर पर-

मात्मा को इस दोष से बचाना चाहते हैं। परन्तु इससे उनका कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, जब तक कुरान उपस्थित है कुरानी परमात्मा इन दोषों से बच नहीं सक्ता ?

सी० ५ सू० नसाय आ० ७८

(९) कुरान की यह शिक्षा है कि जो कुछ होता है परमात्मा की आज्ञा से होता है। तो फिर व्यभिचारी मनुष्यों का व्यभिचार, मदिरापान, डाका, चोरी, प्राणघात, हत्या, लूटमार इत्यादि सब कार्य परमात्मा की आज्ञासे ही हुए। शैतान बिचारे को क्यों कलंकित किया जाता है। शोक! अज्ञानी पुरुषों ने परमात्मा को क्या तमाशा बना दिया।

सी० ११ सू० यूनुस आ० ४६

(१०) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मनुष्यों के उपदेश के लिए नबी भेजता है। परन्तु कुरान में स्थान-स्थान पर देखोगे कि परमात्मा ही जान बूझ कर मनुष्यों को कुमार्ग में ले जा रहा है, और वह स्वयं ही इस बात का पक्षपाती माना गया है, "हां हम गुमराह करते हैं और जिसको हम गुमराह करते हैं उसको कोई राह नहीं दिखा सकता" भला फिर पैगम्बरों के परिश्रम करने की क्या आवश्यकता और पुस्तकों के भर-मार का क्या प्रयोजन ? और शैतानों को दोषी ठहराने की क्यों आवश्यकता पड़ी।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(११) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पवित्रता को पसन्द करता है। परन्तु कुरान को पढ़ने से पता लगता है कि 'खुदा ने नापाक दिल को पाक न करना चाहा बल्कि नापाकी को और भी अधिक कर दिया और गुमराही सत्मार्ग विमुखता

बढ़ा दी' बच्चों का सा खेल है ! एक तुच्छ बात को स्थिर रखने के हेतु बहुत कुछ गढ़न्त करनी पड़ी परन्तु निष्प्रयोजन !

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(१२) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा सब दोषों से रहित है, परन्तु देखिये शैतान को बहकाने वाला और गुमराह करने वाला (सत्मार्ग से भुलावा देने वाला) परमात्मा ही है। हम शैतानी ढकोसले से कल्पना कर सकते हैं कि शैतान लोगों को बहकाता है, परन्तु शैतान का बहकाने वाला परमात्मा है ! शैतान ने स्वयं परमात्मा के सम्मुख कह दिया कि ऐ परमात्मा जिस प्रकार तूने मुझे भुलावा दिया मैं भी इसी प्रकार तेरे मनुष्यों को बहकाऊंगा !

परमात्मा शैतान की इस बात को सुनकर केवल नर्क की धमकी देकर चुप हो रहा और इस विषय में मुख तक न खोला और यह न कह सका कि ऐ शैतान मैंने तुमको नहीं बहकाया ! कहता तो तब जब कि उसने भुलावा न दिया होता ! शोक कि परमात्मा को कितना दूषित किया गया है कि मानो शैतान का शैतान बना दिया गया है ! ऐ हृदय तू रोदन कर और अपने भाइयों के लिए आंसू बहा !

सी० ८ सू० एराफ आ० १६।

(१३) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ठट्ठा मसखरी करने वालों को पसन्द नहीं करता, परन्तु शोक ! वही परमात्मा ठठोरा, मसखरा, माना गया है। परमात्मा को भंगरीन का भंगड़ी बना दिया ! जहां भंगड़ी भंग पीकर एक दूसरे से ठठोल करते हैं, वहां परमात्मा भी बीच में आ कूदता है और वैसा ही भंगड़ीपन आरम्भ कर देता है। यह कितनी लज्जास्पद बात है कि परमात्मा मसखरा और ठठोरा कहा जावे ! परमात्मा पर

ऐसे दोषारोपण वह पुरुष कर सकता है जो या तो नास्तिक हो या जिसने ईश्वर के भाव को निपट न जाना हो। मुझे नहीं विदित कि मैं अपने मस्तिष्क को ऐसा रद्दी किस प्रकार बना लूं कि इस शिक्षा को मानने लग जाऊं। कहां से मैं अपने ऊपर द्वेष की काली चद्दरें ओढ़ लूं कि परमेश्वर ठठोरा दृष्टि पड़ने लग जावे! सी० १ सू० बकर आ० १५।

(१४) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर सौगन्द खाने को अच्छा नहीं समझता, परन्तु कुरान के पृष्ठों को पलटो तो देखोगे कि एक विश्वास रहित और झूठे पुरुष के समान कि जिसकी बात का कोई भरोसा न करता हो, और विवश सौगन्द खाने पर उतारू होता हो, परमेश्वर घोड़ों, ऊंटों, वृक्षों, पर्वतों, पुस्तकों, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों इत्यादि की अनेक बार सौगन्द खा रहा है, मानो इसकी बात का कोई विश्वास नहीं करता है, अतएव सौगन्द खाने पर विवश होता है! द्वितीय सौगन्द उस पदार्थ की खायी जाती है कि जिसको सौगन्द खाने वाला अपने से बड़ा प्रतिष्ठा योग्य तथा पूजनीय समझता है। क्या घोड़े, ऊंट, पहाड़, पत्थर इत्यादि को परमात्मा अपने से बड़ा समझ कर इनकी सौगन्ध खाता है? या कुछ और भेद है आज कल यदि पुरुष अपने वर्णन को प्रमाणित ठहराने के लिए न्यायालय में अथवा पञ्चायत में अपने घोड़े या ऊंट या पहाड़ की सौगन्द खावे तो उस की हंसी उड़ाई जाती है। विदित नहीं कि अरबी परमात्मा ने अरब निवासियों का अनुकरण क्यों किया? और जिन वस्तुओं की अरब निवासी सौगन्द खाते उनकी सौगंद क्यों खाई! भारतवर्ष के आम आलू आलूचे गंगा यमुना और हिमालय की सौगन्द क्यों न खाई? यह केवल बालकों को सुलानें के दुलराव का गीत (लोरी) है औ

परमात्मा का नाम बदनाम किया है। मैं इनके अतिरिक्त कि अपने भाइयों के अर्थ आंसू बहाऊं और क्या कर सकता हूं।

सी० ३० सू० शम्स आ० १-६।

(१५) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा "कुन" कहने से सब कुछ कर सकता है परन्तु क्या वह उन्मत हो गया था, वा अपनी "कुन" की शक्ति को भूल गया था कि उसने व्यर्थ पृथ्वी और आकाश बनाने में छः दिवस लगा दिये। "कुन" ही क्यों नहीं कह दिया या तीन दिन में ही सब कुछ क्यों न बना दिया।

सी० १६ सू० मरयम आ० ३६

(१६) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा अति पवित्र परन्तु कुरान को पढ़ने से विदित होता है कि उसकी आत्मा एक स्त्री के गर्भाशय में भी जा सकती है और मासिक धर्म का रज खा सकती है और नौ मास अपवित्रता में पड़ी रह कर वर्षों तक मनुष्यों के शरीर में बंध को प्राप्त होकर फांसी द्वारा मुक्त हो सकती है। मुझे हार्दिक शोक है कि कुरान ने बाइबिल का अनुकरण किया।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ९१।

(१७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पृथ्वी और आकाश पर सिंहासन आरूढ़ है मानो सब स्थानों पर उपस्थित और द्रष्टा है उसका कोई विशेष स्थान नहीं है। परन्तु आकाश के ऊपर अर्श को ८ फरिस्तों का शिर पर उठाये हुए खड़े होना जबराईल का परमात्मा की ओर से उतरना, महात्मा ईसा का आकाश पर उड़ जाना, अरबी पैगम्बर का बुराक (गदहा विशेष) पर सवार होकर आकाश की सैर और परमात्मा से बातचीत कर आना, शैतानों का आकाश पर जाकर छिप छिप कर परमात्मा और फरिस्तों की बातचीत का सुनना, और उन

पर तारागण तोड़ कर मारे जाना इत्यादि-२ क्या यह इस प्रकार के ढकोसले हैं कि जिनसे यह साबित हो सके कि परमात्मा पृथ्वी पर भी है। यदि पृथ्वी पर भी होता तो फिर उपरोक्त ढकोसलों की क्या जरूरत थी। रोते हुए बालक को बहलाने के लिए यह कहानियां लाभकारी हो सकती हैं परन्तु जिज्ञासु इनको परमात्मा की अपकीरति और अप्रशंसा समझता है। निदान मैं अपने भाईयों के अर्थ ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि वह सत्यवेत्ता हो सकें! सी० ३ सू० बकर आ० २५५।

(१८) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मुशरिकों● से शोकातुर है मुशरिक अपवित्र हैं। परन्तु सबसे पूर्व खुदा में 'शिर्क' (प्रभु के साथ अन्य को मिलाने) की शिक्षा फरिस्तों को दी कि आदमी को दण्डवत करो और जब एक फरिस्ते ने परमात्मा के सिवाय अन्य को मानने से नाहीं की तो उसको मलाऊन× कर दिया। अब दण्ड किसको मिले शैतान को या परमात्मा को? मुशरिक कौन हुआ परमात्मा या शैतान!

सी० १ सू० बकर आ० ३४

(१९) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा किसी को नहीं सताता! भला परमात्मा ने कुछ मनुष्यों के निमित्त कि जिन्होंने नूह का कहना न माना सर्व संसार को क्यों डुबो दिया! और मनुष्यों ने क्या पाप किया था? पशुओं का क्या दोष था? कि इन सबको भी तूफान में डुबो दिया, और फिर बढ़-बढ़कर

● एक परमेश्वर के साथ किसी और को भी मिलाकर परमेश्वर मानने वाले पुरुष को 'मुशरिक' कहते हैं।

× ईश्वर के न्यायालय से जो निन्दा करके निकाला जावे उसे 'मलाऊन' कहते हैं अभिप्राय 'शैतान' से है।

बातें मारने लगा कि हमने नूह का तूफान उतार कर सबको डुबो दिया। क्या निरपराध पशुओं और मनुष्यों को डुबो देना, निर्दई का काम नहीं है तो और किसका है और निर्दई को जो दण्ड है वह प्रत्यक्ष है। अब परमात्मा को नर्क में डाला जावे या जिसने कि परमात्मा पर यह मनगढ़ंत दोषारोपण किये हैं उसको!

सी० १८ सू० मामिनून आ० २७

(२०) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ने बहुधा मनुष्यों के अन्तःकरणों पर मुहर लगा दी और कानों पर पर्दे डाल दिये कि वह उसकी बात को न समझ सकें परन्तु फिर उनको समझाने के लिए नबी भेजना निपट अज्ञानता है और जबकि उसने स्वयं ही कानों पर मोहर लगा दी तो दण्ड उनको क्यों चाहिये? परमात्मा स्वयं नर्क में पड़े वा जो इस प्रकार की फिलासफी (तत्वज्ञान की पुस्तक) बनाता हो वह?

सी० १ सू० बकर आ० ७

शोक! महान् शोक! सत्य मार्ग की शिक्षा कहां?

(२१) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा किसी की सिफारिश स्वीकार नहीं करता परन्तु तत्काल ही फिर कह दिया कि हां कतिपय पुरुषों की सिफारिश वह स्वीकार करेगा। भला सिफारिश और पाप का क्या सम्बन्ध? कुरानी परमात्मा एक स्वतन्त्र नियम शून्य राजा है कि जिसके सम्मुख अपराधी लाये जाते हैं मन्त्री सिफारिश कर रहा है अन्य अधिकारी राज्य के अन्य कार्य भुगता रहे हैं और अच्छा औरंगजेबी दरबार लगा हुआ है, खुदा करे कि मेरे भाइयों की आंखें खुलें और सत्यता का प्रकाश दिखाई दे, उपरोक्त थोड़ी-सी बातें कुरानी

खुदा के सम्बन्ध में है जिनके पढ़ने से इसका अनुमान हो सकता है कि वह क्या "बला" है और किस मस्तिष्क ने उसको गढ़ा है क्या खुदा सम्बन्धी ऐसी शिक्षा आत्मिक शिक्षा का खून नहीं करती ! क्या मक्कार, धोखेबाज, लड़ाके, झगड़ालू को रखने वाले. मसखरे, ठठोल, अन्यायी आदि गुणों से भूषित खुदा की उपासना करने से हममें उपरोक्त अवगुण प्रवेश न करेंगे ! और क्या हमारी आत्मा का इससे खून न होगा ? उपस्थित सज्जन! इसका स्वयं उत्तर दें। खुदा सम्बन्धी यह शिक्षा उन सम्पूर्ण अच्छी बातों पर भी कलंक लगाती है जो कुरान में कहीं-कहीं रेतीले जंगल के वृक्ष कुंज की भांति लिखी हैं। यही नहीं कि कुरान खुदा की पुस्तक होने के दरजे से गिर जाता है किन्तु वह एक साधारण पुस्तक से भी नीचे हो जाता है।

सी० ३ सू० बकर आ० २५५

इसके सिवाय दूसरी बात जो कुरान की शिक्षा में अस्वीकार करने योग्य है वह मनुष्योत्पत्ति है। मझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि बाइबिल से ली हुई कहानियों का नाम खुदाई वाणी रख दिया गया है। आदमी की कहानी जो बाईबिल में है उसी को कुछ हेर फेर करके कुरान में लिखा गया है। कुरानी बाबा आदम कोई नई बला नहीं है किन्तु उसकी कहानी बच्चा बच्चा जानता है मैं इस बात को आदर्श बनाकर कि ऐसी झूठी बातों का एक खुदाई पुस्तक का दम भरने वाली पुस्तक में होना अयोग्य है कुछ बातें नीचे लिखता हूं—

(२२) कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम को मिट्टी से बनाया और उसमें जीवन डाला अर्थात् प्रथम एक मिट्टी का पुतला बनाया और फिर उसमें आत्मा का प्रवेश किया गया वह आत्मा कहां से आई ? यदि हम यह कहें कि

ईश्वर ने अपनी आत्मा उसमें डाली तो मानना पड़ेगा कि ईश्वर में भी वह अवगुण हैं जो उसके एक आत्मा में (जो आदम में आया) थे। यदि यह कहें कि ईश्वर ने अभाव से भाव (आत्मा) उत्पन्न किया तो यह सर्वथा झूठ है क्योंकि अभाव से भाव नहीं हो सकता। अभाव नाम ही उस वस्तु का है कि जिसका कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। अतएव कुरान की इस शिक्षा को मैं स्वीकार नहीं कर सकता!

सी० १४ सू० हजर आ० २८-२९।

(२३) कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम से उसकी बीबी को उत्पन्न किया परन्तु यह स्पष्ट नहीं कि वह उससे किस प्रकार पैदा की गई? भला आदम (के पेट) में स्त्रियों की भांति गर्भाशय था यदि था और उससे उत्पत्ति हुई तो वीर्य्य कहां से आया? ईश्वर के यहां से गिरा अथवा किसी फरिश्ते ने आदम में गर्भ स्थापित किया और क्या फिर एक बीबी को उत्पन्न करके आदम का गर्भाशय गुम हो गया? अधिक सन्तान उससे क्यों न पैदा हुई? इस दशा में आदम को हम पुरुष कहें अथवा स्त्री? यदि पुरुष तो उसके पेट से उसकी बीबी किस प्रकार उत्पन्न हुई? यदि स्त्री तो फिर उसको एक और स्त्री की क्या आवश्यकता? यदि हम यह कहें कि आदम गर्भाशय रहित तो था परन्तु उसकी बीबी उसकी पसली से उत्पन्न की गई यह भी हंसी की बात है और भला ईश्वर को आदम की पसली तोड़ने की क्या आवश्यकता थी? मिट्टी शेष नहीं रही थी या ईश्वर आदम का पुतला बनाकर ही भूल गया था अथवा दूसरा पुतला बनाना ही भूल गया था? जिस प्रकार एक पुतला बनाया था उसी प्रकार उसी के साथ उसकी स्त्री का पुतला भी तय्यार करके उसमें भी फूंक भर देता। इसके अतिरिक्त, ईश्वर की स्मरण

शक्ति के अच्छे न होने का हेतु भी देखो। जब ईश्वर ने बाइबिल उतारा तो वहां ही आदम की बीबी का नाम बता दिया परन्तु कुरान में नाम बताना भी भूल गया। सम्भव है कि यह इसलिये हो कि जहां बाइबिल से और बहुत सी बातें कुरानानुयायी पुरुषों को मिलेंगी वहां आदम की स्त्री का नाम भी मिल जायेगा। ईश्वर मेरे भाइयों के हृदय में सत्य का प्रकाश करे।

सी० २३ सू० जुगर आ० ५।

(२४) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा ने आदम को उसकी स्त्री सहित बैकुण्ठ में रख दिया कि भली भांति खाओ, पियो परन्तु इस वृक्ष के पास मत आना, पापी हो जाओगे। हमें कुरान से अनार अंगूर, जैतून, केले आदि वृक्षों के नाम तो मिलते हैं परन्तु उस वृक्ष का नाम कहीं नहीं मिलता जिसके पास जाने की मनाई की गई थी। इसके लिये फिर हमें बाइबिल खोजनी पड़ती है क्योंकि वह कुरान की अपेक्षा अधिक प्रमाणिक तथा प्राचीन है। सम्भव है कि जब ईश्वर ने बाईबिल उतारी उस समय वह वृक्ष हो और जब कुरान उतारा तो उस समय उसका नाश हो चुका हो। यहां तक कि उसका नाम भी लोहे महफूज (संरक्षित पटिका) से घिस कर मिट गया हो। चेतनाप्रिय पुरुष पूछ सकता है कि जब आदम सस्त्रीक बहिश्त का स्वाद ले रहे थे तो उस समय वहां की हूरें (अप्सरायें) तथा गिलमान (बिना डाढ़ी मूंछ के लड़के) कहां थे ? उनको आदम के साथ नीचे क्यों न फेंका ? अथवा हूरें तथा गिलमान उत्पन्न ही उस समय किये गये जब कि आदम की कहानी तमाम हो चुकी थी और जबराईल (एक मुसलमानी फिरिस्ते का नाम) अरब के रेतीले मैदानों में पंर मारता उड़ता हुआ अरबियों को हूरों के मिलने का सुसमाचार सुनाकर लड़ाई के लिये उकसा रहा था।

मेरे विचार में हूरें केवल कुरानो बेवा हैं, कुरान ही के साथ इनकी उत्पत्ति हुई और उसके साथ ही वह समाप्त हो जावेंगी परन्तु शोक कि कितने मेरे नासमझ भाई ऐसे हैं जो हूरों के पीछे मर रहे हैं। भाइयो ! हूरें केवल "मनमोदक" हैं आप सत्यप्रिय बनें।

सी० १ सू० बकर आ० ३५ ।।

(२५) कुरान की यह शिक्षा है कि आदम सस्त्रीक बहिश्त से निकाला गया और पृथ्वी पर फेंका गया इत्यादि-इत्यादि जिसका न शिर है न पैर है,कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा इकट्ठा कर दिया गया है। बाईबिल के पढ़ने से बाबा आदम की कहानी न्यून से न्यून एक क्रमबद्ध कहानी प्रतीत होती है परन्तु कुरान में क्रम भी नहीं है। बीसों बार आदम की कहानी आरम्भ की गई है। परन्तु दो तीन बातों के दुहराने के अतिरिक्त और कुछ मस्तिष्क के भीतर से नहीं निकल सका। निदान मनुष्य मनुष्य ही है इतनी बातें जो प्रतिदिन सुनी जाती हैं उनमें से किस-किस को याद रक्खें जो याद रह गई वह स्वप्न में दिखाई दे गई। प्रतिफल यह कि आदम और उसकी स्त्री की कहानी बाईबिल के संग्रह में देखने की जगह स्वयं बाईबिल ही में देख सकते हैं। वहां सविस्तार वर्णन किया गया है वह अन्धकार का समय अब शेष नहीं रहा जब कि इस प्रकार की अनर्गल कहानियों को सुनाकर लोगों को श्रद्धालु बना लिया जाता था। अब लोग ऐसे ढकोसलों को स्वीकार करने के लिये तय्यार नहीं हैं। चाहे इन फटी पुरानी कहानियों पर प्रकाश का मुलम्मा भी चढ़ा दिया जावे। इसके अतिरिक्त प्रलय के सम्बन्ध में कुरान की शिक्षा को मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे कितने ही भाई हैं

जो आंखें बन्द करके उसको सत्य मानते हैं। परन्तु मुझे हार्दिक शोक है कि मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता।

सी० १ सू० बकर आ० ३५॥

(२६) कुरान की यह शिक्षा है कि एक दिन नरसिंगा बजाया जावेगा तमाम प्राणी मर जावेंगे। यह अज्ञात है कि यह नरसिंगा कहां फूका जावेगा और उसका नाद सम्पूर्ण पृथिवी पर एक साथ किस प्रकार पहुंचेगा। और समस्त प्राणी एक साथ किस प्रकार नाश हो जावेंगे तथा यह बातें कब होंगी? और फिर खुद सकल सृष्टि का नाश करके कुछ को सदा के लिये बैकुण्ठ में और कुछ को सदा के लिये नर्क के घोर दुःखों में डालकर आप सदा के लिये निपट बेकार हो जावेगा और संसार के झगड़ों से मुक्त होकर सो रहेगा अथवा क्या करेगा? शोक है कि मैं प्रलय के नरसिंगे आदि को स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३० सू० बिना आ० १८

(२७) कुरान की शिक्षा यह है कि खुदा फिरिश्तों की लैन बांध कर प्रलय के मैदान में आवेगा उसके तख्त को ८ फिरिश्ते उठाये हुए होंगे। भला यदि खुदा तथा अर्श साकार तथा सीमा वाली वस्तुयें नहीं हैं तो फिर उसके उठाने के लिये साकार फिरिश्तों का होना क्यों है? यदि कोई कहे कि फिरिश्ते भी साकार नहीं हैं तो जबराईल, मैकाईल आदि के पैर तथा शरीर का वर्णन करने की क्या आवश्यकता थी? मरियम के पास मनुष्य की आकृति में फिरिश्ता भेजने का क्या अर्थ हो सकता है। कुरान की शिक्षा से फिरिश्ते साकार सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार खुदा भी जो अर्श पर बैठा हुआ आज्ञायें जारी कर रहा है और कभी-कभी अग्नि की आकृति में पहाड़ों तथा मैदानों में भी उतरता है।

सो० १७ सू० अम्बिया आ० १०४

(२८) कुरान की यह शिक्षा है कि मुर्दे जाग उठेंगे, यह आश्चर्य जनक वार्ता है कि घास-पात की भांति मुर्दे से शिर निकालेंगे। भला जो जला दिये गये, जिनकी राख नदियों में बहा दी गई, जिनको सिंह भेड़िये खा गये, वह कबरों में से क्यों कर उत्पन्न हो जावेंगे। बहुधा मुसलमान शरीरों का जीवित होना नहीं मानते, परन्तु कुरान में अनेक स्थलों पर शरीरों के जीवित होने के उदाहरण देकर समझाया गया है कि लोग इस पर विश्वास करें कि उनके शरीर फिर जीवित किये जावेंगे।

सी० ३० सू० फच्र आ० २२

(२९) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा तराजू लगा कर बैठेगा और लोगों के अच्छे बुरे कर्मों को तोलेगा और स्वर्ग में जाने वालों को उनके कर्म पत्र दायें हाथ में और नर्क में प्रवेश करने वालों के बायें हाथ में देगा। यह ज्ञात नहीं होता कि खुदा को दुकानदारों की भांति तखरी बाटों की क्या आवश्यकता पड़ेगी? भला कर्म भी कोई ठोस वस्तु है, कि जिनको तोल लिया जायेगा? कर्मों का तोलना ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुरुष तखरी बाटों के साथ अपने वहमी ख्यालात को तोलने लग जावे जो सर्वथा पागलपन है। ईश्वर यदि सर्वज्ञ है तो शीघ्र ही उसे सबको बतला देना चाहिये कि तुम्हारे यह-यह कर्म हैं, निष्प्रयोजन दुःख उठाने की क्या आवश्यकता है।

सी० १७ स० अम्बिया आ० ४७

(३०) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन पहाड़ रुई की तरह उड़ते फिरेंगे। गप भी यदि मारी जाये तो कुछ बढ़ कर। भला हिमालय पहाड़ जो कई सौ मील लम्बा तथा कितने ही मील चौड़ा है उड़ कर कहां जावेगा? उधर

अमरीका तथा योरुपके पहाड़ रुई की भांति उड़कर किस आकाश में पहुंचेंगे ? सी० ३० सू० अल्बारअ आ० ५.

(३१) क़ुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन चन्द्रमा सूर्य से जा मिलेगा, परन्तु अन्य ग्रह जो सूर्य तथा चन्द्रमा से भी बड़े हैं वह कहां जावेंगे । उन नक्षत्रों का कहीं ईश्वर ने नाम तक नहीं लिया । क्या इसलिये कि अरबके लोग उस समय तक उनके नाम से अनभिज्ञ थे । सी० २९ सू० क्यामत आ० ९

(३२) कुरान की यह शिक्षा है कि सितारे गिर पड़ेंगे । भला वह गिर कर कहां जावेंगे । क्या पृथिवी पर आ जावेंगे ? यदि हां ! तो पृथिवी पर इतने ग्रहों के लिये स्थान कहां होगा । और जब खुदा पृथिवी को भी लपेट लेगा, तो फिर ग्रह किधर भागेंगे ? मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता ।

सी० ३० सू० इन्कतार आ० २

(३३) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन पृथिवी बातें करेगी और ईश्वर को अपनी सारी कहानी सुनावेगी, परन्तु यह ज्ञात नहीं कि सूर्य तथा चन्द्रमा क्यों बातें नहीं करेंगे । अन्य ग्रह क्यों चुप रहेंगे ? यह सब विद्याहीन पुरुषों की बातें हैं जिनको स्वीकार नहीं कर सकता ।

सी० ३० सू० जुल जाल आ० ४-५.

(३४) कुरान की शिक्षा है कि प्रलय के दिन ईश्वर लोगों के मुख पर तो मुहर लगा देगा और उनके हाथ, पांव, कान और त्वचा आदि बोलेंगे और मनुष्य के कर्मों को बतावेंगे । मनुष्य उनकी इस क्रूरता को देखकर कहेगा कि तुम मेरे विपरीत साक्षी क्यों देते हो । यह बड़ी आश्चर्ययुक्त बात है कि मनुष्य के हाथ पांव आदि जिह्वा का कार्य करेंगे । मैं इसको नहीं मान सकता । सी० २४ सू० हमसिजदा आ० २०-२१

उपरोक्त प्रलय सम्बन्धी ढकोसलों को छोड़कर स्वर्ग सम्बन्धी कुरान की शिक्षा और भी कुत्सित और घिनावनी है। सच पूछो तो कुरान की शिक्षा ने स्वर्ग को इतना बुरा घर बना दिया है कि जहां जाना भले मानसों का काम तो कदापि नहीं है, परन्तु कितने ही मूर्ख लोग स्वर्ग की बात ठीक मानकर रात दिन उसकी प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं। और मनगढ़न्त बातों का आखेट बनकर वास्तविक सचाई को हाथ से गमा बैठे हैं। कुरानी स्वर्ग क्या वस्तु है। इसका कुछ चित्र खींचकर आपके सन्मुख उपस्थित करता हूं।

(३५) कुरान की यह शिक्षा है कि अच्छे कर्म करो जिससे सदैव के लिये स्वर्ग में जाओ जहां दुःख का लेश मात्र भी नहीं है। प्रथम तो यही विवादास्पद है कि मनुष्य कदापि एक दशा में रहना स्वीकार नहीं कर सकता है। यदि इसको नित्य सुख प्राप्त हो जावे तो वह प्रसन्नता इसको उसी प्रकार दुःखदाई हो जायेगी जिस प्रकार बनी इसराईल (मूसा के अनुयायी लोगों) के लिये 'मन' (एक खाने का पदार्थ जो बनी इसराईल के लिये आकाश से गिरता था) तथा बटेर हो गई, जिनके बदले उन्होंने ईश्वर से लहसन पियाज मोंठ तथा मूंग की दाल मांगी। स्वर्ग वासी लोग जब वहां के अच्छे-अच्छे भोजन खाते-खाते थक जावेंगे तो उनको नर्क की आकांक्षा करनी पड़ेगी, विशेषकर जब कि इस स्वर्ग म निम्न पदार्थ होंगे।

सी० १ सू० बकर आ० ८१

(३६) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में पीने के लिये शराब तथा खाने के लिये कबाब मिलेंगे। वाह! शराब तथा कबाब का अच्छा जोड़ मिलाया है। भला पशु जो वध किए जावेंगे उनका रक्त कहां गिरेगा। यदि विना वध किए

ही पशु पक्षी आदि भून लिये जावेंगे तो क्या वह (हराम) त्याज्य न होंगे। शोक है कि मेरे कितने ही भाई केवल शराब के प्यालों तथा पशु पक्षियों के मांस के लिये नुमाज रोजे हज तथा जकात (दान) आदि कार्य करने का कष्ट उठा रहे हैं।

सी० २७ सू० वाकआ आ० १८-२१

(३७) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में रेशमी कपड़े पहिनने को मिलेंगे। पाठकगण! रेशम के साथ आपके सम्मुख शीघ्र ही रेशम के कीड़ों, शहतूत के वृक्षों तथा कपड़ा बुनने की कलों का चित्र आ सकता है, इतना सामान स्वर्ग में कहां से आवेगा और इतने रेशमी कपड़े कौन बुनेगा क्या खुदा बुनेगा? यदि नहीं तो स्वर्ग के कुछ मनुष्य बुनेंगे? यदि हां! तो फिर वहां भी उनको साधारण मजदूरों की भांति सेवा करनी पड़ेगी। विशेषता क्या हुई? शोक है मेरे भाई रेशमी कीड़ों के थूक आदि से बने हुये कपड़ों के आसक्त होकर कितने धोके में फंस रहे हैं।

सी० २९ सू० दहर आ० १२-१३

(३८) कुरान की शिक्षा है कि स्वर्ग में दूध तथा शहद की नहरें होंगी। भला यदि दूध और शहद की नहरें होंगी तो दूध के लिये भैंसों तथा शहद के लिये मक्खियों की भी आवश्यकता पड़ सकती है, जो एक साधारण बात है।

सी० २६ सू० मोहम्मद आ० १६

(३९) कुरान के भाष्यकारों ने तो यहां तक गप्प हांकी है कि जो मनुष्य एक बार 'कौसर' तथा 'तसनीम' (स्वर्ग की नहरों) से पानी पी लेगा, उसको फिर कभी प्यास नहीं लगेगी यदि प्यास नहीं लगेगी तो फिर नहरों के रखने से क्या लाभ? यदि यह कहा जावे कि स्नान के लिये तो कौनसा बुद्धिमान पुरुष

है जो शरबत, शहद तथा दूध से स्नान करेगा। शोक है कि नहरों का पानी पीने के लिये भलाई की जावे।

(४०) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में निवास करने वालों को सोने तथा चांदी के कंगन पहनाये जावेंगे। भला यह कौनसी सभ्यता है कि स्त्रियों का आभूषण (गहना) पुरुष पहनने लगें।

सी० १५ सू० कहफ आ० ३२

भला विचारिये तो कि यदि एक पढ़ा लिखा बी०ए०एम० ए० अथवा कोई मौलवी साहिब ही कगनों की जोड़ी पहन कर बाजार में फिरे तो उसको कितनी लज्जा आवेगी और लोग उसका कितना ठठोल मचावेंगे? क्या स्वर्ग में जाने से यह लज्जा जाती रहेगी ? और क्या हमारे इस समय के बड़े-बड़े सुधारक-गण जो आभूषण पहनने से कतराते हैं, वहां हीजरों तथा स्त्रियों की भांति कंगन पहन कर फिरा करेंगे। कंगन बनाने के लिये सोना चांदी सुनार कोयला तथा भट्टी आदि की आवश्यकता पड़ेगी वा खुदा स्वयं बनाकर दे दिया करेगा। कितने ही मेरे भाई सोने चांदी के कंगन पहनने के लिये नमाज रोजे हज तथा जकात आदि करते हैं। शोक का स्थल है कि कंगनों की जोड़ी के लिये सेवा की जावे।

(४१) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में लोगों को गोरी क्वारी युवा तथा काली आंखों वाली स्त्रियां मिलेंगी। उपस्थित गण जिस प्रयोजन के लिये यह होंगी वह आप स्वयम् ही समझ सकते हैं। ब्रह्मचारी इस प्रकार अश्लील बातों को मुंह पर लाना भी महान् पाप समझता है। शोक! शोक!! शत शोक!!! उत्तम हो कि स्वर्ग के स्थान में लाहौर का अनार-कली बाजार (भले मानस आदमियों को उससे निकालकर) रख

दिया जावे। छी! छी!! नुमाज रोजे और अन्य कार्य किस ओर बह रहे हैं और क्या पदार्थ (सौदा) क्रय कर रहे हैं? यदि मैं अपने भाइयों की ऐसी शिक्षा पर चार-चार आंसू बहाऊं और इनको स्वर्ग के दुर्व्यसनों से बचाने के लिये रोदन करूं तो वह मेरा मुख्य कर्त्तव्य है।

सी० २७ सू० रहमान आ० ५५-७२

(४२) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्गवालों को लड़के भी मिलेंगे जो बिना डाढ़ी मूंछ के युवा होंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि लड़कों की वहां क्या आवश्यकता है? लड़के किनको मिलेंगे पुरुष को अथवा स्त्रियों को? न्याय तो यही चाहता है कि जब एक-एक पुरुष को बहुत सी हूरें मिलेंगी तो एक-एक स्त्री को बहुत से युवा लड़के मिलने चाहियें। परन्तु कुरान से इसका निवटारा कर सकते हैं। मैं खुदा से प्रार्थी हूं कि वह सबको उपरोक्त स्वर्ग से बचावें।

सी० २९ सू० दहर १९

उपस्थित गण! मेरी हार्दिक प्रार्थना का साथ दें वरन् एक पग आगे बढ़ावें। मैं आपको बताऊंगा कि उपरोक्त स्वर्ग के अतिरिक्त कुरान की शिक्षा मनुष्य को दयालु कदापि नहीं बना सकती क्योंकि जहां मांस भक्षण और बलिप्रदान है वहां दया का भाव कहां? और इस कारण आत्मिक शिक्षा का भी अभाव है। कुरान की शिक्षा में से किसी ने मेरे कोमल हृदय पर इतनी चोट नहीं पहुंचाई जितनी की मांस भक्षण और बलीप्रदान की शिक्षा ने। यदि आप में से कोई पुरुष मुझसे प्रश्न करें कि संसार में आत्मा का नष्ट करने वाला सबसे बड़ा पाप कौनसा है तो मैं शीघ्र ही उत्तर दे दूंगा कि मांस भक्षण महान् पाप है। जो

आत्मोन्नति के मार्ग में सबसे बढ़कर रोक बनाता है जिस हृदय के पास ही पेट में मांस के टुकड़े पड़े हैं और हड्डियों का रस भरा हुआ है वहां आत्मिक तेज कहां है ? मांस का टुकड़ा भीतर गया और आत्मिक शिक्षा का भाव बाहर हुआ । यदि कोई पुरुष मेरे पास आकर कहे कि अमुक स्थान पर सुई के छेद में से हाथी निकल गया तो कदाचित् मैं इसको सत्य मान लूं परन्तु यदि कोई आकर यह कहे कि अमुक स्थान पर एक मांस भक्षक ने औलिया अल्लाह (ईश्वर प्राप्ति का आनन्द अनुभव करने वाला) अथवा पैगम्बर होकर, आत्मा के मर्म को जान लिया तो मैं इसको कदापि स्वीकार नहीं करूंगा । पत्थर है वह हृदय जो निरपराधी बकरी की बिलबलाहट को जो वह हनन किये जाने के समय करती है सुनकर पिघल नहीं जाता ? वहां आत्मिक शिक्षा का बीज कदापि नहीं उग सकता । मेरा हृदय दुःख से भर आता है जब कि मैं एक निरपराधिनी तथा जिह्वा रहित बकरी की आंसू भरी आंखों को कसाई की छुरी पर लगी हुई देखता हूं ! जब कि मैं कसाई को दोनों घुटने बकरी के तड़पते हुए शरीर पर रखे हुए और गले पर छुरी चलाते हुए देखता हूं। क्या लोहे की शलाकाओं में हरे पत्ते लग सकते हैं ? क्या कसाई और मांस भक्षक पुरुष का हृदय कभी आत्मिक शिक्षा की हरियाली से हरा भरा हो सकता है नहीं ! कदापि नहीं ! यदि कोई मांस भक्षक आत्मिक शिक्षा का दम भरे तो उसको कह देना चाहिये कि सिंह तथा वृक (भेड़िये) आत्मिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते !

दया ज़िसको धर्म का मूल कहा गया है हड्डी चूसने वालों के हृदय से उतनी दूर रहती है जितनी दूर सूर्य से पृथ्वी । सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पड़ सकती हैं परन्तु दया की किरण हड्डी

चूसने के हृदय से सदैव दूर रहती हैं। इसलिए वह दयावान अथवा धार्मिक कदापि नहीं हो सकता। मुझे हार्दिक शोक के साथ कहना पड़ता है कि कुरान मांस भक्षण तथा बलिप्रदान की शिक्षा देता है मेरा हृदय रोदन करता है जब मैं बकरी के कण्ठ और कसाई की छुरी को स्वर्ग प्राप्ति के लिए कुरान के पृष्ठों में लिखा हुआ पाता हूं उपस्थितगण देखें।

(४२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के नाम पर पशु बध करो उसका मांस आप खाओ और अन्यों को खिलाओ। कुरान के कुछ भाष्यकारों ने तो यहां तक भी वर्णन किया है कि जो पुरुष इस संसार में पशुओं का बलिप्रदान करते हैं वह प्रयल के दिन उनके कन्धों पर चढ़कर (बैतरणी को इस प्रकार पार कर जावेंगे जिस प्रकार बिजली! ईदुज्जुहा (मुसलमानी त्योहार) के दिन किसी मसजिद में जाकर खुतबा (उपदेश) सुनिये:— भाइयो! धन्यवाद दो कि ईश्वर ने तुमसे दुम्बा भेड़ बकरी आदि की ही कुरबानी लेनी स्वीकार की है! यदि इसमाईल का बध हो जाता तो आज प्रत्येक मुसलमान को अपने बड़े बेटे का बलि प्रदान करना पड़ता इत्यादि-२, लम्बी चौड़ी कहानी सुनाई जाती है। सुनने वालों को भी धन्यवाद है! कह देते हैं। परन्तु आप किञ्चित विचार तो करिये कि पशुओं का हनन करना कहां और मोक्ष कहां? शोक! महा शोक! पशुवृत्ति तथा दुर्व्यसनों के वर्षों के पाले हुये भीतर के बकरे आत्मिक शिक्षा के भाव की हरियाली को दिन रात चर रहे हैं, उनको तो हनन न किया जावे, किन्तु निरपराधी जो घास पात खाने वाले भेड़, बकरी तथा गाय आदि लाभदायक पशुओं का बध करके चित की वृत्तियों को और भी दुर्व्यसनों की ओर लगाया जावे।

ईश्वर करे कि मुसलमानो तुम सच्चा बलि प्रदान कर

सको । भेड़, बकरी, गाय तथा ऊंट आदि के हनन करने के स्थान में तुम अपने मन की कुत्सित चञ्चल वृत्तियों का हनन करके ईश्वर के न्यायालय में उपस्थित करके ऋषियों तथा मुनियों की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सको जब कि ईश्वर मांस चर्म तथा रक्त पान नहीं करता तो फिर रक्त क्यों बहाते हो । हृदय की पवित्रता को उसके सम्मुख भेंट करो ।

सी० १७ सू० हज्ज आ० ३४-३७

(४४) कुरान में शिक्षा है कि मरे हुये सूकर तथा रक्त अभक्ष्य हैं । परन्तु विचार करिये कि मरा हुआ किसे कहते हैं । वह जिसके प्राण निकल गये हों-चाहे लाठी मारने से चाहे छुरी के आघात से । शैतान का नाम लेकर हनन किया गया हो अथवा ईश्वर का नाम लेने से काटा गया हो परन्तु मुरदार वह है जिस-में अब प्राण नहीं है । क्या ईश्वर का नाम लेने से यदि एक पशु वध किया जावे तो वह मुरदार अथवा प्राणरहित न हो जावेगा फिर वह हराम क्यों न हुआ ? फिर देखिये कि रक्त अभक्ष्य है मैं आपसे पूछता हूं कि यदि रक्त अभक्ष्य है तो मांस क्यों भक्ष्य हो गया ? वह भी सर्वथा अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह भी तो रक्त ही से बनता है । किञ्चिद् ध्यान दीजिये मादा के गर्भाशय में वीर्य्य उसके रक्त से पलता है उसकी सम्पूर्ण हड्डी, पसली, मांस, त्वचा, रक्त एक-२ बिन्दु से बनती हैं और सम्पूर्ण शरीर रक्त ही से पलता है हड्डी रक्त से बनती है त्वचा तथा मांस भी रक्त से, चरबी भी रक्त से और स्वच्छ रक्त से, यह नहीं कि खाने में हड्डी तथा चरबी आदि पृथक्-२ उपस्थित होती हैं, पेट में जाकर हड्डी-२ के साथ और मांस-मांस के साथ जा मिलता हो नहीं वरन् पहले रक्त बनता है, फिर रक्त से अन्य अवयव बनते हैं यदि रक्त से अभक्ष्य हो गया तो मांस उससे भी

बढ़कर अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह रक्त का जमा हुआ सत है। परन्तु मेरे भाइयों को यह बात कौन समझावे। वहां तो पक्षपात का डेरा जमा हुआ है, किसी की शक्ति क्या कि वह उसके विपरीत कुछ कह सके ? फिर पूछिये कि सुअर क्यों अभक्ष्य है ? क्या इसलिये कि वह अपवित्र भक्षी है? यदि यही कारण है तो मुर्गे मुरगियां तथा भेड़ें भी अभक्ष्य होनी चाहियें। जो अपवित्र खाने वाले हैं अथवा इसलिये कि वह अधिक मैथुन प्रिय हैं उसके मांस से काम शक्ति अधिक उत्पन्न होती है? तो फिर मुरगे तथा बकरों से बढ़कर कौन से पशु अधिक काम प्रिय हैं वे भी अभक्ष्य होने चाहियें, मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि सुअर क्यों अभक्ष्य समझा जावे तथा अन्य पशु क्यों भक्ष्य समझे जावें।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४

(४५) कुरान की शिक्षा है कि रुधिर अभक्ष्य है। यहां तक कि यदि उसकी बूंद कपड़े पर लग जावे तो वह अपवित्र हो जाता है। तो क्या जमा हुआ रुधिर अर्थात् मांस खाने से देह आत्मा अपवित्र नहीं होंगे। शोक है कि शरीर और आत्मा को कपड़े से भी निकृष्ट समझा जावे।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४।

(४६) कुरान की शिक्षा है कि बैतुअल्लाह अर्थात् काबे के घर में जो पवित्र स्थान माना गया है, रुधिर मत गिराओ क्या खुदा का घर अरब के एक कोने की चतुर्दिग सीमा तक ही है ? और शेष संसार शैतान का घर है ? कोई कारण विदित नहीं होता कि इस घर में तो लोहू गिराना वर्जित किया जावे और दूसरे स्थानों में उचित समझा जावे। इससे तो यह सिद्ध होता है कि खुदा एक स्थानीय है और अरब के एक कोने

में अपना घर रखता है। शोक है! उन मनुष्यों की बुद्धि पर जो सारे संसार को ईश्वर का घर न समझ कर पशुओं के रुधिर से उसको अपवित्र कर रहे हैं। वह दिन कब आयेगा जब कि निर्दोष भेड़ बकरी के बच्चों का शोक जनक शब्द जो वह बध होते समय निकालता है मेरे भाइयों के हृदयों को इस प्रकार क्लेशित और अधीर कर देगा, जैसा कि उनके एक प्यारे बच्चे की बिलबिलाहट जिसका गला ईश्वर न करे कोई छुरी से काट रहा हो। सी० ७ सू० मायदा आ० ९७

(४७) कुरान की शिक्षा है कि अहराम के दिनों में आखेट करना और किसी पशु का मारना त्याज्य है। अहराम उन दिनों को कहते हैं जबकि हाजी लोग खुदा के घर की यात्रा करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं परन्तु क्या केवल अरबी मास की विशेष तिथि नियत हो सकती हैं जबकि मनुष्य को निर्दोष हो जाना उचित है। यदि हां तो मानना पड़ेगा कि खुदा भी फसली बटेरों की नाई एक नियत समय पर अपने घर में उपस्थित होता है और शेष दिनों में लुप्त रहता हैं। परन्तु ऐसा नहीं। ईश्वर प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान में उपस्थित रहता है। वह जो पक्का हाजी है वह सर्वदा निर्दोष जीवन व्यतीत करता है। और कभी भी पशुओं का रुधिर गिराकर पृथिवी को अपवित्र नहीं करता और कभी भी निरपराध पशुओं का गला काट कर अपने चित्त से दया भाव को जो धर्म का मूल हैं हानि नहीं पहुंचाता। वह सदैव ही आराम में रहता है और इसीलिये अरबी हाजी से बढ़कर कि अहराम थोड़े दिनों के लिये ही होता हैं, अधिक प्रतिष्ठा का भाग होता हैं। ईश्वर करे कि मुसलमानों में ऐसे निर्दोष हाजी उत्पन्न हों, केवल हाजी ही उत्पन्न न हो किन्तु बुद्धिमान और ब्रह्म ज्ञानी लोग

उत्पन्न हों जो उपरोक्त बातों को छोड़ने के अतिरिक्त निम्न लिखित सृष्टि विरुद्ध बातों को गहरी दृष्टि से देखें और उनसे चित्त हटावें। उपस्थितगण! मैं कुरानी शिक्षा की बातों में से कुछ बातें कि जिन पर सभ्य मनुष्य हंसी उड़ाते हैं आपके सम्मुख उपस्थित करता हूं।

सी० ७ सू० मायदा आ० ९६-९८

(४८) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा मूसा की लाठी का खुदा ने बड़ा भारी सांप बना दिया। जिसको देखकर फरऊन, जो एक नास्तिक राजा था, डर गया। उसने समझा कि मूसा एक जादूगर है। सब जादूगरों को उपस्थित होने की आज्ञा दी। जादूगरों ने लाठियों और रस्सियों के सांप बना दिये। मूसा भी यह दृश्य देख कर डर गया। खुदा ने उसी समय फरिस्ता भेजा कि मत डरे, तू जीत जायेगा अपनी लाठी पृथिवी पर फेंक दे। निदान मूसा ने खुदा की आज्ञानुसार अपना डण्डा पृथिवी पर दे मारा फिर वह "फैजा हिया सोबानुन मुबीन" देखते के देखते ही एक भारी अजगर बन गया और "फैजा हिया तलक फोमा या फिकून" जादूगरों के डंडों और रस्सों से बनाये हुये सब सांपों को खा गया। भाष्यकारों ने तो यहां तक गप्प हांकी है कि यह सब डंडे और रस्से ४० गदहों पर लादकर तमाशा घर में लाये गये थे, और कई सौ मन तौल में थे। मूसा की लाठी ने कई सौ मन लाठियों को खाकर डकार तक भी न ली और जुगाली तक भी न की! कहा गया है कि चारों ओर देखने वाले जो एकत्रित थे वे इस अद्भुत अजगर को देखकर ऐसे अन्धाधुन्ध भागे कि इस भगदड़ में २५००० मनुष्य पावों के तले रौंदे जाकर मारे गये। मूसा ने जब देखा कि यह तो बड़ा अन्याय हुआ, ईश्वर की जा प्रयों ही मारी गई, तो उन्होंने

तुरन्त साँप को पकड़ लिया और वह वैसे की वैसे ही लाठी बन गई। आश्चर्य का स्थान है कि उस लाठी की तौल कई सौ मन रस्से और डंडे खाकर भी उतनी ही रही जितनी कि पहले थी और उसका पेट तनिक भी बड़ा न हुआ और न कहीं वह खुराक दृष्टि पड़ी। सच है मोजजा (अद्भुत क्रिया) हो तो ऐसी ही हो, और उसको मानने वाले भी हों तो कुरान वाले ही हों! जो पहिले सृष्टि नियम और बुद्धि को पागल खाने के दारोगों के हाथ बन्धक कर दे। एक उन्नीसवीं शताब्दी के रिफार्मर मुसलमान ने कुरान की ऐसी मिथ्या बातों पर कलई तो चढ़ाई, परन्तु वृथा मुलम्मा करने से यथार्थ को नहीं छिपा सकते। ईश्वर करे मेरे भाइयों की आंखें खुलें और इस प्रकार की असत्य बातों को वह देख सकें।

सी० ९ सू० एराफ आ० १७-११७

(४९) कुरान की शिक्षा है कि मूसा ने उपरोक्त लाठी मार कर समुद्र को फाड़ दिया और उसमें बारह रास्ते बन गये। मूसा की सब सेना उनमें होकर चली गई और जब फरऊन की सेना निकलने लगी तो समुद्र मिल गया और वे सब डूब गये और मूसा बनीइसराईल सहित बच निकले। वाह! क्या विचित्र लाठी थी, जो मूसा के साथ एकान्त में बातें करती थी, रात को पहरा देती थी, दिन को छत्री का काम देती थी, और इच्छानुसार छोटी बड़ी हो जाती थी! तभी तो उसने समुद्र को फाड़ दिया, परन्तु ज्ञात नहीं कि महात्मा मूसा के मरने के पश्चात् वह लाठी कहां चली गई। निःसन्देह ऐसा पदार्थ अजायब घर में रखा जाना चाहिये। शोक है ऐसी इलहामी गप्पों पर।

सी० १९ सू० शुअरा आ० ६३-६६

(५०) कुरान की शिक्षा है कि हजरत मूसा ने डंडा मारकर

पत्थर में से बारह श्रोत निकाल दिये । बनी इसराईल ने अच्छे प्रकार तृप्त होकर पानी पिया । बुद्धिमान् भाष्यकार महाशय तो इस गप्प को यहां तक हांकते हैं कि जब महात्मा मूसा यथन नामिक नगर विशेष में पधारे तो मार्ग में उनको एक छोटा-सा पत्थर मिला उसने हज़रत मूसा से वार्तालाप किया और कहा कि मुझे उठाले । मैं किसी कठिन समय में काम आऊंगा । निदान महात्मा मूसा ने वह पत्थर उठा कर अपने तोबड़े में डाल लिया। जब बनी इसराईल ने पानी मांगा तो ख़ुदा ने कहा कि वह पत्थर जो तेरे तोबड़े में है उसको निकाल और लाठी से मार, उसमें से बारह श्रोत निकल आवेंगे । निदान ऐसा ही हुआ । पुराण ने तो शिवजी के सिर में से गंगा बहा दी, परन्तु कुरान ने अपने बड़े भाई से तनिक आगे पग बढ़ाया और पत्थर में से बारह धारा निकाल दीं । शोक है संसार की अविद्या पर ।

सी० १ सू० बकर आ० ५९

(५१) कुरान की शिक्षा है कि जब बनीइसराईल सत मार्ग विहिन हो गये और ख़ुदा की बातों को भूल गये तो ख़ुदा ने पहाड़ उंठा लिया और उनसे कहा कि या तो मेरी बातों को मान लो नहीं अभी पहाड़ तुम्हारे सिर पर गिरता है । बड़े आश्चर्य की बात है कि ख़ुदा ने पहाड़ उठाने का कष्ट सहा ! यह सम्भव जान पड़ता है कि पहाड़ उठाने की कहानी या तो कुरान से पुराण में आई अथवा पुराण से कुरान में गई, क्योंकि महाराज श्रीकृष्ण का उंगली पर पहाड़ उठाना भी कुछ अभिप्राय रखता है। हाय अविद्या और अन्धकार ।

सी० १ सू० बकर आ० ६२

(५२) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा सुलेमान एक दिन

मैदान में से जा रहे थे, वहां की चींटियों ने जब उनकी सेना को आते देखा तो उनमें से एक चींटी बोली कि भाइयो! अपने बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो सुलेमान और उसकी सेना तुमको पांव के नीचे कुचल डाले। सुलेमान इस बात को सुनकर बहुत हंसा और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया कि च्यूटियों की बात-चीत भी सुन सकते थे। महाशयो डारविन जैसे मनुष्यों ने मक्खियों और च्यूटियों के पीछे आयु व्यतीत कर दी, पर उनकी भाषा को न समझ सके। शोक है ऐसी गढ़न्त पर! तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारों ने तो यहां तक बात बढ़ाई है कि इस च्यूटी का शरीर भेड़ के समान था, और उसका नाम मन्दजा था और सुलेमान ने उसका शब्द तीन कोस के अन्तर से सुन लिया। बात चीत करते समय सुलेमान ने बीबी च्यूंटी से पूछा कि तेरी सेना कितनी है? च्यूंटी बोली कि मेरे पास चार सहस्र योद्धा और प्रत्येक योधा के आधीन चालीस चालीस सहस्र प्रधान और प्रत्येक प्रधान के आधीन चालीस सहस्र च्यूंटियां हैं। सारांश यह कि सुलेमान और बीबी च्यूंटी का बड़ा आश्चर्य जनक सम्भाषण है जो बच्चों को बहलाने के लिये मनोरंजक है। शोक है। भाष्यकारों की बुद्धि पर कि च्यूंटियों की कहानियों को ईश्वर की ओर से कहकर ईश्वरीय ज्ञान का नाम बदनाम करते हैं ईश्वर! तू प्रकाश भेज और भाइयों को सीधा रास्ता दिखा।

सी० १९ सू० नमल आ० १७-१९

(५३) कुरान की शिक्षा है कि हजरत सुलेमान जन्तुओं की भाषा जानते थे। जैसे हुदहुद वा चक्की राहे पक्षी की जो कुरान में कहानी है वह विचित्र है। हुदहुद की सुलेमान के साथ बातचीत, चक्की राहे का रानी की ओर से पत्र ले जाना और वहां से उत्तर लाना, रानी का सुलेमान के समीप आना इत्यादि

एक मनोरंजक कहानी और ईश्वरीय ज्ञान की कहानी है। कदाचित् इसी कारण से लोग हुदहुद को सुलेमान का पुत्र कहते हैं। परन्तु क्या आज कल वह अपनी सुलेमानी भाषा भूल गया है। शोक है ऐसी गप्पों के लिये जबराईल के पंख थकाये जावें। और जो लोग इनको ईश्वर की ओर से समझें उनको काफ़िर कहा जावे। आश्चर्य की बात है कि अविद्या के समय में तो लोग मन गढ़न्त बातों पर विश्वास कर लेते थे, परन्तु आज कल सभ्य शिक्षित बी० ए० और एम० ए० की डिगरी प्राप्त स्कूलों और कालिजों में चौदह पन्द्रह वर्ष तक विद्या प्राप्त बुद्धिमान् मुसलमान भी बहुधा इनका आखेट बन रहे हैं।

सी० १० नमल आ० १६-२२

(५४) कुरान की शिक्षा है कि वायु सुलेमान की आज्ञा से चलता था और उनके सिंहासन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा देता था। सम्भव है कि कोई कुरानी इस स्थान से यह सिद्ध करने की चेष्टा करे कि देखिये महाशय! कुरान तो साइन्स का घर है। यूरोप वासियों ने तो अब वेलून यन्त्र बनाया है, परन्तु कुरान में उसका वर्णन पहिले ही से था। सुलेमान वेलून पर चढ़ा करते थे। सम्भव है कि कुरान में से रेल और तार भी निकल आवें। परन्तु सुलेमान का वायु को आज्ञानुकूल चलाना अत्यन्त ही आश्चर्य की बात है। वायु किस प्रकार उनकी आज्ञा को सुनता होगा। इसी बात को लेकर कदाचित् एक परिहासक ने वायु और मच्छरों का अभियोग सुलेमान के न्यायालय में आना बतलाया है।

सी० २३ सू० सद आ० ३६

(५५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा की बही (स्वर्गीय आज्ञा) केवल पैगम्बरों के पास ही नहीं आई किन्तु वह मधु-

मक्खियों के पास भी आई। निदान मक्खियों का मधु एकत्रित करना और घर बनाना इसी बही के अनुसार है कि जिस बही के अनुसार कुरान है। इसके अनुसार तो फिर पक्षियों, अबाबीलों, कौवों, कबूतरों के घोंसले भी खुदा की बही के द्वारा ही बनते हैं परन्तु जबराईल किस-किस के पास पहुंचाता होगा। राज और अन्य शिल्पकार भी तो फिर खुदा की बही के अनुसार ही सब काम करते होंगे। परन्तु जबराईल का आकार वे क्यों नहीं देख सकते और क्यों नहीं वे इलहाम का दम भरते? इसलिये कि वे बुद्धिमान् हैं।

सी० १४ सू० नहल आ० ६८-६९

(५६) कुरान की शिक्षा है कि अबाबीलों ने कंकरियें मार कर हाथियों और मनुष्यों का खलियान कर दिया और सब सेना को नष्ट कर दिया। निःसन्देह यदि यह गप्प कुछ भी बढ़कर न हो तो वह मोजजा नहीं समझी जा सकती। कहां हाथी और कहां अबाबील एक कोड़े खाने वाला पक्षी। भाष्यकार महाशयों ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से अच्छा काम लिया है। कहते हैं कि एक-एक अबाबील तीन-तीन कंकरियां लिये हुए था, दो दोनों पंजों में एक मुंह में। प्रत्येक कंकरी पर मारे जाने वाले का नाम लिखा हुआ था। उसी के वह लगती थी, दूसरे के नहीं, यहां तक कि जो मनुष्य रणभूमि से भाग गये थे उनके नाम की कंकरी उनके पीछे गई और जहां वे ठहरे वहां जाकर सिर पर लगी और नष्ट कर दिये। शोक अविद्या के समय के बने हुए वृक्ष अब तक हरे हैं।

सी० ३० सू० फील आ० १-५

(५७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने नास्तिकों को आस्तिक बनाने के लिये एक विशेष ऊटनी उत्पन्न की। मूख

लोग तो यहां तक गप्प हांकते हैं कि वह ऊटनी एक पत्थर में से उत्पन्न हुई और उत्पन्न होने के साथ ही उसने बच्चा भी दे दिया। फिर काफिरों ने उस ऊंटनी को मार डाला और उन पर दुःख पड़ा। भाष्यकर लिखते हैं कि उस ऊंटनी का बच्चा डरकर पहाड़ की ओर भाग गया और वहां तीन बार चिल्लाया और फिर आकाश की ओर उड़ गया। निदान प्रलय के दिन यह ऊंटनी बच्चे सहित बहिश्त में चरती फिरेगी। शोक है ऐसी मूर्खता पर और ऐसी गप्पों पर।

सी० ५ सू० इस्राईल आ० ५६

(५८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने बनी इसराईल को उनके दुष्टाचार के कारण बिजली द्वारा नष्ट कर दिया। भाष्यकार कहते हैं कि महात्मा मूसा इस बात को देखकर रो पड़े कि लोग मुझे क्या कहेंगे। इसलिये खुदा ने उन सबको फिर जीवित कर दिया। विदित होता है कि यह किसी दूसरी बातों की भांति यों ही गप्प हांक दी है नहीं तो बिजली के साथ नष्ट हो जाना और फिर जीवित हो जाना क्या अर्थ रखता है ?

सी० १ सू० बकर आ० ५४-५५

(५६) कुरान की यह शिक्षा है कि जब बनी इसराईल मिश्र देश से निकल कर भूखों मरने लगा तो खुदा ने उनके लिये मन (हलवा विशेष) और सलवा (बटेर की भांति का पक्षी) आकाश से भेजे। भाष्यकार कहते हैं कि सलवा एक प्रकार का पक्षी होता था जो घास पर आकर बैठता और चेचहाने के पश्चात् स्वयं ही भुनकर नीचे गिर पड़ता था। उसमें न नस होती, न रुधिर, न हड्डी। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार से कोई पूछे कि पक्षी स्वयं भुनकर किस प्रकार गिर पड़ा करता था और यदि उनमें नस, रुधिर, हड्डी आदि नहीं थी तो वे उड़ने वाले

पक्षी कैसे हो गये । यह सब बच्चों को बहलाने के लिये कहानियां हैं जिनको मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता ।

सी० १ सू० बकर आ० ५६

(६०) कुरान की शिक्षा है कि बनी इसराईल को धूप ने सताया तो खुदा ने उस पर बादल भेज दिया और वह छप्पर का काम देने लगा । कुछ लोग यहां तक अनर्थ करते हैं कि वह बादल बनी इसराईल के साथ-साथ शिरों पर चला करता था और छांह रखता था । मैं इसको स्वीकार नहीं कर सकता ?

सी० १ सू० बकर आ० ५६

(६१) कुरान की शिक्षा है कि बनी इसराईल को कहा गया कि गाय को वध करो । लोग बड़े चकराये । मूसा से कहने लगा कि तुम हमारे साथ ठठोल करते हो । उनके चकराने का यह कारण सा था कि उनमें से एक मनुष्य को किसी ने मार डाला । मृतक को मारने वाला नहीं मिलता था । इसलिये खुदा ने आज्ञा दी कि गाय वध करके उसका एक टुकड़ा मृतक को मारो मृतक जीवित हो जायेगा और स्वयं अपने मारने वाले का नाम बता देगा । निदान खुदा के साथ बहुत तर्क वितर्क के पश्चात् गाय के रंग आयु परिणाम आदि का निर्णय हुआ और गाय वध की गई । भाष्यकार महाशय इस बात को पुष्ट करने के लिए लिखते हैं कि गाय की पूछ लेकर मृतक के मारी गई । तत्क्षण जीवित हो गया और मारने वालों का नाम बताकर तुरन्त ही मर गया । देखिए गाय की पूछ में मृतक को जीवित करने की सामर्थ्य है । इसलिए यदि कुछ पौराणिक हिन्दू गाय की पूंछ पकड़ कर मुक्ति पा लेना मान लें तो क्या आश्चर्य है । शोक है कि कुरान जैसा उम्मुल किताब (किताब की माता अर्थात् मूल)

ईश्वरीय होने के स्थान से इस प्रकार की गप्पों से उम्मुलगप्पात (अर्थात् गप्पों की माता वा मूल) बन रही है।

सी० १ सू० बकर आ० ६६-७२

(६२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने फरऊन के लोगों पर टिड्डी मेंडक चोचड़ी आदि का दुःख उतारा और फरऊनियों के घरों को तूफान (रौ) में डुबो दिया। भाष्यकार लिखते हैं कि फरऊन के घरों में तो पानी भर गया, परन्तु इसराईलियों के घर नीचे होने पर भी सूखे रहे और फिर खुदा ने नील नदी का सब पानी लोहू कर दिया। जब फरऊनी लोग पीते, तब तो लोहू हो जाता और जब इसराईली पीते तब वैसे का वैसा ही पानी रहता। मैं पूछता हूं कि ऐसी मिथ्या बातों की क्या आवश्यकता थी? सच है हबशियों के हाथ में गोरा मनुष्य जा फंसा, उन्होंने देखा कि यह तो हमसे सर्वथा विलक्षण है, मुंह पर स्याही मलकर अपने जैसा कर लिया। शोक है भाष्यकारों की बुद्धि पर और आश्चर्य है, ऐसे इलहामों पर कि जिनको मैं स्वीकार करने में असमर्थ हूं।

सी० ९ सू० एराफ आ० ३-१२

(६३) कुरान की शिक्षा है कि जब मूसा कोह तूर पर खुदा से बातें करने में निमग्न थे तो बनी इसराईल ने एक बछड़े की पूजा आरम्भ कर दी, जो सोने चांदी के गहनों को ढालकर बनाया गया था और वह गाय की भांति बोला करता था। आश्चर्य है कि धातु से बना हुआ बछड़ा गाय की नाईं बोले। परन्तु उपस्थित गण! कुछ तो स्वयं खुदा ने और कुछ भाष्यकारों ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जब बनी इसराईल नदी को पार कर रहे थे तो महात्मा जबराईल घोड़े पर सवार होकर उसके आगे-आगे चलते थे। एक मनुष्य सामरी नामी ने

जबराईल को देख लिया और उनके घोड़े के सुम के नीचे की धूल से एक मुट्ठी भर ली। जब उसने मूसा की अनुपस्थिति में सोने चांदी को ढालकर बछड़ा बना लिया तो उसके मुंह में वह मुट्ठी डाल दी। वह उसी समय बोलने लगा और उसका शब्द सुनते ही बनीइसराईल उसके सम्मुख सिजदे में गिर पड़े। ज्ञात होता है कि पूर्वकाल में गाय की पूजा पृथिवी भर पर थी। किन्तु खुदा के कलाम में धातु के बछड़े का जीवित होना और बोलना चलना केवल गप्प है कि जिसको मैं कदापि नहीं मान सकता। सी० १६ स० तो आ० ८८-९८

(६४) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने इबराहीम से कहा कि अपना बेटा मेरे नाम पर बलिदान कर, निदान वह बलिदान करने लगे, पर छुरी ने काट न किया और खुदा ने एक दुम्बा जबराईल के हाथ बहिश्त से भेज दिया और कहा कि हे इबराहीम तू बड़ा शूर है। ले इस भेंड़े को, अपने पुत्र के बदले बलिदान कर भाष्यकारों ने इसको और बढ़ाकर लिखा है कि इसराईल की ग्रीवा तांबे की बन गयी, इस कारण छुरी ने काट न किया। कोई-२ कहते हैं कि कट जाती थी और पुनः मिल जाती थी। अब दुम्बा जो बहिश्त से लाया गया था जो एक समय आदम के पुत्र हाबील ने खुदा के नाम पर बलिदान किया था। वह इस कारण कि बहिश्त में था, अब दुबारा बलिदान किया गया। उसके बड़े-२ सींग थे और चालीस वर्ष पर्य्यन्त बहिश्त की अंगूरी चरता रहा था। मैं इन मिथ्या बातों को नहीं मानता। सी० २३ सू० जकात आ० १०२-१०७

(६५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के पैगम्बर इबराहीम को अग्नि में डाल दिया गया अग्नि नितान्त ठण्डी हो गयी। चारों ओर पुष्प खिल पड़े और पानी के श्रोत बहने लगे।

आश्चर्य की बात है कि लटीमर और करनीमर जैसे ईश्वर भक्त आग में फेंके गये और वह ठण्डी न हुई। क्या खुदा को स्मरण न रहा था ! और खुदा का इबराहीम से विशेष प्रेम था और वहां आग के फूल बना दिये और यहां ठण्डी तक न की ? यह सब मूर्खों को विश्वासी बनाने की बातें हैं। यदि कुरान का खुदा कोई ऐसी लीला दिखा सकता है तो चाहिये कि आज कल किसी मुसलमान को जो ईश्वर प्राप्त मनुष्य और पैगम्बर होकर खुदा के साथ ईसा अथवा मूसा की नाईं बातें करने का दम भरता हो, एक लम्बी चौड़ी भट्ठी को आग से भर कर, बीच में फेंक दिया जावे। यदि आग पुष्प बन जावे तो समझें कि कुरानी मोजजे सब सत्य हैं ? बहुधा मूर्ख लोग तो इस मोजजे के यहां तक विश्वासी हैं कि वह आयत "कुलना या नारो कूनी व रदन व सलामन् अलाइबराहीम" को पीपल के पत्तों पर लिख कर ज्वर के रोगी को धोकर पिलाते हैं और विश्वास रखते हैं कि इससे बुखार उतर जाता है। शोक है इस मूर्खता पर।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ६९

(६६) कुरान की यह शिक्षा है कि मूसा एक ईश्वर भक्त से मिलने गया। पता यह है कि जहां भुनी हुई मछली जीवित होकर पानी में चली जावे, वहां पर ही वह मनुष्य मिलेगा। बड़ा कष्ट उठाकर मूसा एक स्थान में पहुंचे। जहां मछली जीवित होकर पानी मे चली गई और इस ईश्वर भक्त से बातें की। मैं पूंछता हूं कि भुनी हुई मछली क्योंकर जीवित रही हो, विश्वास रहित गप्पों का नाम ही मोजजा होता है। मैं इस शिक्षा को नहीं मान सकता।

सी० १६ सू० कहफ आ० ६२-६५

(६७) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा ईसा मिट्टी के

खिलौने बनाकर उनमें आत्मा डाल देता था और अपने मित्रों के सम्मुख ही उसको उड़ा दिया करता था। यह उसका मोजजा था। कुरानी तो यह मान सकते हैं क्योंकि महात्मा ईसा उनके विचारानुसार बिना पिता के उत्पन्न हुए थे, इसलिये वह पशुओं को भी बिना मां-बाप के उत्पन्न कर सकते थे, परन्तु मैं इतनी बड़ी गप्पों और सृष्टि नियम विरुद्ध बातों को कदापि नहीं मान सकता !

सी० ३ सू० उमरान् आ० ४८

(६८) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा ईसा मुर्दों को जीवित कर देते थे। शोक है जीवित करने का नुसखा कदाचित भूल से कुरान में न लिखा जा सका, नहीं तो मुर्दों पर आज कल भी परीक्षा करके देख लिया जाता। भाष्यकारों ने जो इस पर बुद्धि को दूर रखकर लिखा है, वह विचित्र लिखा है। फिर एक मौलवी साहब कहते हैं कि कुरान की शिक्षा सृष्टि नियमानुकूल होती तो मैं उसको क्यों त्यागता। यहां तो पुराणों से भी बढ़कर लीला उपस्थित है।

सी० ३ सू० उमरान आ० ४७

(६९) कुरान की शिक्षा है कि यहूदियों ने न तो महात्मा ईसा को मारा न फांसी ही दी, किन्तु उन लोगों को भ्रम हो गया। इस भ्रम को भाष्यकारों ने यों सिद्ध किया है कि महात्मा ईसा को खुदा ने आकाश पर बुला लिया और उसके स्थान में उसके एक शत्रु का आकार जो ईसा के मारने पर उतारू था ईसा के सदृश बना दिया। लोगों ने उसे मार डाला। और महात्मा ईसा साहब आकाश पर भाग गये। न जाने आकाश पर किस प्रकार उड़ गये। और चालीस पचास मील ऊपर जाकर वह स्वास कैसे लेते रहे ! यह बाइबिल की नकल की गयी है।

और इसी के अनुकरण में उन्होंने पैगम्बर को भी बुराक पर चढ़ा कर सातों आकाशों की सैर करा दी है, और आदम ईसा मूसा इब्राहीम की खुदा से बातें करा दी हैं।

सी० ६ सू० निसाम आ० १५-५८

(७०) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने एक मनुष्य को प्रलय का विश्वास दिलाने के लिये मार दिया। और सौ वर्ष पश्चात् जीवित करके पूछा बता तू कितने वर्ष मृतक रहा, कहा एक दिन से भी न्यून। खुदा ने कहा कि नहीं तू सौ वर्ष तक मृतक रहा देख तेरे गधे की हड्डियां अत्यन्त सड़ गई हैं। हम उसको तेरे सम्मुख हो मांस और खाल लगाकर जीवित करते है। गधा भी सौ वर्ष का मृतक जीवित हो गया। उत्तमता यह है कि उसका खाना भी सौ वर्ष में कुछ भी न सड़ा और वैसे का वैसा ही तर व ताजा रहा। क्या यह छोटी सी गप्प है? विदित होता है कि उस मनुष्य ने स्वप्न देखा होगा! पर उड़ाने वालों ने अच्छी बेपर की उड़ाई! इलहामी पुस्तक गप्पों का घर है इस कारण मानने योग्य नहीं।

सी० ३ सू० बकर आ० २०६

(७१) कुरान की शिक्षा है कि इबराहीम ने खुदा से पूछा-- ऐ खुदा! तू कैसे प्रयल के दिन मृतक जीवित करेगा। खुदा ने कहा क्या तुझे इसमें कुछ सन्देह है? इबराहीम ने उत्तर दिया कि सन्देह तो नहीं पर मेरे मनको विश्वास नहीं है। खुदा ने कहा अच्छा चार पक्षी लेकर उनके टुकड़े करके चार पहाड़ों पर रख दे और फिर उनको बुला। वह तेरी ओर भागते आयेंगे। तीव्र बुद्धि भाष्यकारी ने उस पर टिप्पणी चढ़ाकर भली भांति प्रकाशित किया है। लिखते हैं कि महात्मा इबराहीम ने एक कव्वा एक कबूतर एक फाखता (पिण्डख) और एक मैना चार पक्षी

लिये चारों के सिर काट कर तो अपने पास रख लिये और धड़ों को ओखली में मिलाकर कूट चूर-२ कर दिये और उस चूड़े का थोड़ा-२ सा भाग पर्वतों पर रख दिया, फिर बोलने लगा "ऐ कौव्वे आ, ऐ कतबूर चला आ, ऐ फाखता (पिण्डख) उड़कर आजा, ऐ मैना चल और तुम अपने-२ सिरों के साथ आलगो" निदान ऐसा ही हुआ। महात्मा इबराहीम को तो इस विचित्र लीला से विश्वास आ गया। पर मेरा कुरान पर से ईमान टूट गया। शोक ! मैं ऐसी निरर्थक बातों को स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३ सू० बकर आ० २६०

(७२) कुरान की शिक्षा है कि सप्ताह वाले दिन मछली पकड़ने वालों को खुदा ने सुअर और बन्दर बना दिया। पूछना चाहिये कि मनुष्यों के सुअर और बन्दर कैसे बन गये? क्या उनके पूछ भी निकल आई थी अथवा बिना पूंछ के बन्दर और सुअर बने थे। ये सब व्यर्थ गप्पें हैं जिनको बुद्धिमान् कदापि मान नहीं सकते। ईश्वर करे कि मुसलमानों को इन बातों का यथार्थ पता लगे ! परन्तु मुझे डर है कि जब उनको ये बातें मिथ्या जान पड़ेंगी तो इन पर नया जामा चढ़ाने की चेष्टा करेंगे। कुछ लोगों ने ऐसी चेष्टा की भी है, और कुछ कर रहे हैं। जब उन्होंने देखा कि महात्मा कुरान बह चले तो व्यर्थ टिप्पणी और रंग चढ़ाना आरम्भ किया कि किसी प्रकार यह कठपुतली की दृश्य (तमाशा) बना रहे। मैं इनसे पूछता हूं कि यदि एक बात प्रत्यक्ष झूठ और बुद्धि विरुद्ध है तो उसको क्यों न मरी हुई मक्खी की भांति निकाल कर फेंक दिया जावे। क्या झूठमूठ उलटे-पुलटे प्रमाण देकर ईश्वर की शक्ति को

बदनाम किया जावे और गधे और ऊंट बनाने के लिए मस्तक (तर्क) छांटी जावे।

सी० ६ सू० एराफ आ० १६६

(७३) कुरान की शिक्षा है कि कुछ फीट लम्बी चौड़ी नौका में नूह ने पृथिवी भर के सब पशु-पक्षी इत्यादि का एक-२ जोड़ा उनके खाद्य द्रव्य सहित रख लिया और शेष सब प्राणी नष्ट हो गये ! यह कितनी बड़ी गप्प, वरन् गप्प का भाई गपोड़ा है। हाथी गेंडा, सिंह, भेंड़िये, सुअर, बन्दर, गाय, भैंस ऊंट आदि लाखों बड़े-२ जन्तुओं को एक छोटी-सी नौका में रख लेना कौन मान ले? भला क्या महात्मा नूह पृथिवी भर के सब पशु पक्षी कीड़े मकोड़े सर्पादि रेंगने वाले जीवों के नाम और जाति जानते थे, जो क्रमानुसार नौका में बिठाते गये। यदि नूह की कोई ऐसी पुस्तक है जिसमें वह यह नाम छोड़ गये हों मिल जावे तो नेचरिस्ट को एक बहुमूल्य उत्तम पदार्थ हाथ लग जावे। पर शोक है इन बातों का कहीं सिर पैर नहीं है। विचार का स्थान है कि कुरान और पुराण एक समान होने के अतिरिक्त मिथ्या कहानियों से कैसे भरे हुए हैं ! सच पूछो तो ये दोनों सगे भाई हैं। दोनों ही मूर्खता के राज्य में उत्पन्न हुए! मूर्ख लोग कहानियों में उलझ रहे हैं और बहुधा मिथ्या विचार में फंसे हैं। ईश्वर इन सब पर अपनी दया करे।

सी० १८ सू० मोमिनूह आ० २०

(७४) कुरान की शिक्षा है कि यदि एक स्त्री किसी पुरुष का मुख तक भी न देखे तो भी उसके पुत्र उत्पन्न हो सकता है, इस बात का प्रमाण हजरत ईसा और मरियम के वृत्तान्त से मिलता है जो कुरान में कई स्थानों में आया है। कुरान वाले हजरत ईसा को यूसुफ बढ़ई का बेटा नहीं मानते, जैसा कि व

है। उलटा उसे बिना पिता के उत्पन्न हुआ मानते हैं। इस बात से सृष्टि नियम पर धब्बा और मरियम पर दोष लगता है। और यह बात मोजजे के स्थान में एक अश्लील बात हो जाती है। मेरी बुद्धि और सभ्यता आज्ञा नहीं देतो कि मैं हजरत ईसा को उन बच्चों के साथ मिलाऊं जो आज कल अज्ञात पिता से उत्पन्न हुए समझे जाते हैं। कुरान की ऐसी शिक्षा से ही मेरा मन खट्टा हुआ। ईश्वर करे मेरे भाईयों को उपदेश प्राप्त हो और इन मिथ्या बातों से छुटकारा पा सकें।

सी० १६ सू० मरयम आ० १६-३५

(७५) कुरान की यह शिक्षा है कि जब लूत के अनुगामियों नें हजरत लूत का उपदेश न माना तो खुदा को बड़ा क्रोध आया और इसी क्रोध में आकर उन सब नगरों का उठाकर उलटा कर के फेंक दिया और फिर ऊपर से पत्थरों का मेह वर्षा दिया। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार इस बात को और भी बढ़ाकर कहते हैं और लिखते हैं कि खुदा नें आप तो नगरों को नहीं उलटा था, किन्तु उसनें जबराईल को आज्ञा दी कि वह अपने पंख नगरों के नीचे रख कर गृह आदि को पंखों पर उठा ले, निदान जबराईल अनेक नगरों को पंखों पर उठाकर आकाश की ओर उड़ गया और इतना ऊंचा चला गया कि आकाश वालों ने भी उन नगरों के गधों और कुत्तों और मुर्गों का शब्द सुन लिया। फिर जबराईल नें ऊपर से उल्टा करके नोचे फेंक दिया और वह सब नष्ट हो गये। शोक है! मूर्खता पर।

सी० १२ सू० हूद आ० ८२

(७६) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने शेब पैगम्बर के अनुयायियों को घोर शब्द करके ही नष्ट कर दिया। और इसी प्रकार सोलह पैगम्बर कें अनुयायियों को नष्ट कर दिया। क्या

थे घोर शब्द अब बन्द हो गये हैं ? ये सब बच्चों को बहलाने की कहानियां है कि जिनको यदि पढ़े लिखे मनुष्य सत्य मान लें तो वे भी बच्चे ही समझे जायेंगे।

सी० ६२ सू० हूद आ० ९४

(७७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने मुठ्ठी भरकर कंकरियां मार कर मुसलमानों की विपक्षी सेना को भगा दिया। महाशयगण ! भला क्या ईश्वर भी कंकरियों और रोडे मारा करता है ? रोड़े मारना अज्ञान बालकों का काम होता है न कि बुद्धिमानों का और फिर खुदा का ! मैं इन बातों को मान नहीं सकता।

सी० ९ सू० अनफाल आ० १७

(७८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने सहस्रों फरिश्ते मुसलमानों की ओर से लड़ने के लिए भेजने की प्रतिज्ञा की। शोक है कि वह आकाशी सहायता अब तक न मिलने के कारण दीन मुसलमान स्पेन व आस्ट्रीया से निकाले गये, यूरोप में उनकी हार हुई, अफ्रीका में पराजित हुये, भारतवर्ष में राज खो बैठे। पर स्वर्गीय फरिश्तों ने उनकी सहायता न की। सम्भव है कि फरिश्ते फिरंगियों की तोपों के शब्द से डरकर आकाश में ही छिप रहे हों, अथवा मार्ग भूल गये हों। भला ऐसी मिथ्या बात क्या मानने योग्य हैं !

सी० ९ सू० अनफाल आ० १७

(७९) कुरान की शिक्षा है कि जुलकरनैन ने पश्चिम में जाकर देखा कि सूर्य एक दलदल अर्थात् कीचड़ में अस्त होता है। क्या खूब ! पर जुलकरनैनी दलदल का जहाज चलाने वालों को अब तक पता नहीं मिला। अमरीका मिल गया, आस्ट्रेलिया मिल गया, अनेक अन्य टापू भी मिल गये, पर जुलकरनैनी दल-

बल न मिला। क्या शुष्क हो गई है या आकाश पर चढ़ गई है! महाशयो! एक साधारण भूगोलविद् भी इस बात को नहीं मान सकता तो मैं कैसे मान सकता हूं।

सी० १६ सू० कहफ आ० ८६

(८०) कुरान की शिक्षा है कि जुलकरनैन ने याजूज माजूज को लोहे की भीत और समुद्र के बीच में बन्दी कर दिया और ये अद्भुत मनुष्य प्रलय के दिन वहां से निकलेंगे। शोक की बात है कि यूरोप वालों नें चप्पा-२ पृथिवी खोज डाली और पृथिवी भर की जनसंख्या जान ली। पर याजूज माजूज उनको कहीं न मिले अर्थात् लोगों ने यह कह देना आरम्भ किया कि दीवार चीन सद सिकन्दरी (अर्थात् सिकन्दर बादशाह की बनाई भीत शत्रुओं के रोकने के लिये) है और मंगोलिया वाले याजूज हैं। भाष्यकारों ने तीक्ष्ण बुद्धि से भला काम लिया। लिखते हैं कि याजूज माजूज का परिणाम एक बालिश्त से लेकर एक सौ बीस गज तक लम्बा है। उनके कान इतने बड़े हैं कि रात को सोते समय एक कान को तो नीचे बिछा लेते हैं और दूसरे कान को चादर की भांति ओढ़ लेते हैं। शोक है ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि पर और शोक है ऐसी इलहामी गप्पों पर! न जाने मुसलमान महाशय कब कुरानी कहानियों को छोड़ेंगे! पुराण की बखिया तो स्वामी दयानन्दजी नें उधेड़ी और लोगों को प्रकाश दिखाया, परन्तु कुरान की बखिया न जाने कौन उधेड़ेगा और मुसलमान कब प्रकाश देखने के योग्य होंगे। ईश्वर करे यह शीघ्र हो।

सी० १६ सू० कहफ आ० ६४

(८१) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को बिन खम्भों के चौकी पहरों सहित उत्पन्न किया और जब कोई शैतान चुप चाप ऊपर जाकर फरिश्तों की बात चीत सुनने

लगता है तो उसके नक्षत्र तोड़ कर मारे जाते हैं और शैतान इस अग्नि वर्षा से डरकर भाग जाता है। निस्संदेह यदि शैतान अपनी शैतानी से न फिरे तो एक दिन आकाश नक्षत्रों से रहित हो जायेगा और फिर चन्द्रमा और सूर्य तोड़ कर मारने पड़ेंगे। फिर किसी दिन सातों के सातों आकाश ही शैतान के सिर पर मारनें पड़ेंगे। एक तीव्र बुद्धि भाष्यकार ने गप्पों की गप्प हांकते हुये लिखा है कि प्रथम आकाश दृढ़ लहर का और द्वितीय संगमरमर का तृतीय लोहे का चतुर्थ शीशे का पञ्चम चांदी का षष्ठ सुवर्ण का सप्तम लालमणि का है। अत्यन्त शोक है इन पूर्ण मूर्खों पर! भला यदि कोई मुसलमान विद्यार्थी भूगोल और एस्ट्रनोमी (ज्योतिष) पढ़कर कुरान से विमुख न हो जाय तो वह और किस कूप में गिरे।

सी० २३ सू० साफात आ० ७-१०

(८२) कुरान की शिक्षा है कि रोजे के दिनों में उस समय तक खाना उचित है जब तक प्रातः काल की सफेदी इतनी न हो जाये कि श्वेत धागे को काले धागे से भेद कर सकें। उसके पश्चात् दिन भर मुंह बन्द रखना उचित है। आधी रात को उठकर खाना कितना सृष्टि नियम विरुद्ध है। पशु पक्षी, कीट पतंगादि भी बहुधा रात्रि को विश्राम करते हैं। परन्तु रोजेदार को पेट की पड़ी हुई होती है। अरब में तो यह कानून चल गया। परन्तु खुदा को यह नहीं सूझा कि पृथिवी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के रहने वाले कैसे रोजा रक्खा करेंगे? क्या ६ मास पर्यन्त दिन को भूखा मरना पड़ेगा! कितनी अधूरी शिक्षा है। महाशयगण! उपरोक्त आक्षेप योग्य बातों को रद्दी के टोकरे में डालकर तनिक एक पग और आगे चलिये।

सी० २ सू० बकर आ० १८७

(८३) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को हाथों के बल से बनाया और खुदा को तनिक भी थकावट न हुई। मैं पूछता हूं कि हाथों से आकाश बनाने की क्या आवश्यकता थी ? "कुन्" का शब्द कह देना ही काफी था, आकाश बन गया होता ! यह माना जा सकता है कि रब्बउल कुरान बड़ा शक्तिमान और बली है, इसलिये हाथ के साथ काम करके साधारण मजबूरों की भांति उसको कुछ थकावट न हुई किन्तु वह कुन् का शब्द क्यों भूल गया। कदाचित् हाथ का बल दिखाने के लिये। शोक है ! इस शिक्षा पर।

सी० ३७ सू० जारयात आ० ४७

(८४) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने पृथिवी पर पहाड़ इस कारण रखे हैं कि वह मनुष्यों के भार से हिल न जावे। शोक है ! कि फिर भी पृथिवी की सरदर्दी दूर न हुई और बराबर घूम रही है और बहुधा मारे कष्ट के कांप उठती है। कहां आज कल का प्रकाश और कहां कुरान की शिक्षा, भला दोनों का क्या मेल हो सकता है ?

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ३-१३

(८५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा आकाश और पृथिवी को थाम रहा है। ऐसा न हो कि अपने-अपने स्थान से इधर-उधर हट जाय। शोक ! कुरानी खुदा की शक्ति कितनी अल्प है कि पृथिवी को बनाकर उसको थामना पड़ा। कदाचित् इसीलिए कुरान में कहा है कि "लाताखुजहोसन्तिबला नौम्" अर्थात् खुदा को न तो कभी नींद आती है और न ऊंघ ही। भला बखेड़े डालकर खुदा को नींद कहां नसीब। तनिक ऊंघ पड़े तो पृथिवी हाथ से गिड़ पड़े अथवा आकाश छूट जाय और सब कुछ किया कराया मिट्टी में मिल जावे। कुछ भाष्यकारों ने

यों लिखा है जब यहूदी आदि लोगों ने कहा कि ईसा खुदा का बेटा है तो पृथिवी और आकाश इस कुफ्र के शब्द को समझ सुनकर फटने को ही थे कि खुदा ने उनको पकड़ लिया और फटने से रोका। शोक है! ऐसे प्रकाश पर। हे ईश्वर! तू मेरे भाइयों को वह प्रकाश प्रदान कर जो मुझको प्राप्त हुआ है।

सी० २ सू० फातिर आ० ४१

(८६) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने नाना प्रकार के कार्य पूरा करने के लिए फरिश्ते नियत किये हैं। इस फरिश्तों के पंख होते हैं। कुछ के दो-दो और कुछ के तीन-तीन और किसी-किसीके चार-चार और किसी-किसी के इनसे भी अधिक। भाष्यकारों ने तो जबराईल के छः सौ पंख वर्णन किये हैं, अज्ञानी लोग तो यहां तक वणन करते हैं, जबराईल का एक पंख पूर्व में और दूसरा पश्चिम में पहुंचता है और फरिश्तों के विषय में अद्‌भुत गढ़न्त बनाये हुए हैं जैसे हारुत मारुत दो फरिश्ते बाबल के कूप में अब तक बन्दी है। कदाचित् बावल नगर के खण्डेर खोदते-खोदते ये फरिश्ते भी मिल जावें। मैं ऐसे विचित्र पंख वाले जीवों का होना नहीं मान सकता।

सी० २२ सू० फातिर आ० १

(८७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा दोजख से प्रलय के दिन प्रश्न करेगा क्या तू इतने मनुष्य और २ पत्थर खाकर तृप्त हो गई वा नहीं? पेटू जहन्नम बोलेगी क्या कुछ और भी शेष है? अर्थात् यदि कुछ शेष है तो दीजिये। खुदा उसके इस पेटूपन को देखकर चुप हो जायेगा। और कुछ उत्तर न देगा। निःसन्देह खुदा का उत्तर न देना सभ्यता के सर्वथा विरुद्ध है। भाष्यकारों ने इसका यह उत्तर दिया है कि खुदा अपने दोनों पांव

दोजख में डाल देगा और जहन्नुम् को तृप्त करेगा। शोक ! महा शोक ! ऐसी असभ्यता की शिक्षा पर !

सी० १६ सू० काफ दाल आ० ३०

(८८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा दोजख को मनुष्यों जिन्नों और पत्थरों से भरेगा। न जानें जिन्न कौन हैं। भूतों और चुड़ैलों की कथा तो सुना करते थे। पर जिन्नों का वृत्तांत कुरान, सूरत जिन्न और अन्य आयतों में ही पढ़ने में आया है। भला पत्थरों ने क्या पाप किया है, जो उनको दोजख में डाला जावेगा। सम्भव है यह इस कारण हो कि मूर्ति पूजकों को वहां मूर्ति बनाने के लिये पत्थरों की खोज में इधर उधर न जाना पड़े, किन्तु दोजख में से ही पत्थर लेकर मूर्ति बनाकर पूजने लग जावें और यह तो कुरान का निश्चित सिद्धांत है कि सब मूर्ति पूजक दोजख में डाले जावेंगे। किसी ने सत्य कहा है कि खुदा प्रत्येक पदार्थ के साथ उसके आवश्यक द्रव्य रखता है। क्या ही अच्छा होता यदि वर्तमान समय के प्रकाश के साथ खुदा कुरान को न रखता।

सी० १ सू० वकर आ० २४

(८९) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा को खूब कर्ज (ऋण) दो, यह दो गुना फेर देगा। शोक है ! कि खुदा सूद को कुरान में हराम न ठहरावे, और स्वयं दो गुने सूद पर कर्ज ले। भला खुदा को कर्ज की क्या आवश्यकता ? क्या उसे किसी बेटे बेटी का विवाह करना था। घर बनवाना था कि लोगों से कर्ज लेने की आवश्यकता पड़ी। अच्छा होता यदि कहने वाला कहता "खुदा के नाम पर मुझे कर्ज दो" जैसा कि आज-कल अनेक भिखमंगे बाजारों में कहा करते हैं। "बाबा ! खुदा के नाम का टुकड़ा दिला" पर कोई ऐसा अपमान नहीं करता

कि "बाबा ! खुदा को टुकड़ा दिया" शोक है ! ऐसी अपमान जनक और व्यर्थ शिक्षा पर । शोक है ! मनुष्य पर, कि उसने खुदा को क्या-२ बना दिया कि दूकानदारों और साहूकारों को भी मात कर दिया ।

सी० २७ सू० हदिया आ० १८-११

(९०) कुरान की शिक्षा है कि यदि खुदा चाहता तो सबको एक धर्म में कर देता । परन्तु पूछिये कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया और ऐसा क्यों नहीं कर देता । क्या धर्म के लिए लोगों का रुधिर बहता हुआ देखना उसको अधिक प्रसन्न करता है । क्या रूम देश वासियों की नाईं है, जो उस स्थान पर बैठ कर सिंह और भेड़ियों को मनुष्यों के साथ लड़ते हुए और लोहू लुहान होते हुए देखकर अपनी हिंसकता की तृप्ति करते थे ? अथवा क्या वह चाहता है कि धार्मिक युद्ध में भी टेलीमेंग्स वा एलीमेंक्स आकर अपना रुधिर बहावें तो उसकी हिंसकता की तृप्ति हो । आश्चर्य है ऐसी शिक्षा पर ।

सी० ६ सू० मायदा आ० ५३

(९१) कुरान की शिक्षा है कि खुदा जिसको चाहता है गुमराह (कुमार्गगामी) करता है और जिसको चाहता है राह पर लाता है । भला फिर मनुष्यों को क्यों दोजख में डाला जावे ! जब कि उन्होंने जो कुछ किया वह खुदा की इच्छानुसार ही किया । खुदा स्वयं ही दोजख में जावे । अज्ञानी लोग इस मिथ्या बात पर तदवीर तकदीर भाग्य और चेष्टा की लंगड़ी शिक्षा का खोल चढ़ाते है किन्तु व्यर्थ ?

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(९२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा मुशरिक के सिवाय अन्य के पाप क्षमा कर देता है । आश्चर्य की बात है कि एक मूर्ति

पूजक कि जिसने कभी मदिरापान, व्यभिचार, चोरी, ठगी नहीं की और सर्वदा अपने देवता के क्रोध से डरता रहा, दोजख में डाला जावे और दूसरी ओर एक मदिरा पान करने हारा कबाबी, व्यभिचारी, चोर और दुष्ट मनुष्य अपने सब पापों को क्षमा करवाकर स्वर्ग का आनन्द भोगे। शोक है! कि कर्म 'थ्यौरी' को छोड़ कर पश्चात्ताप क्षमा सहायता और मध्यस्थ के निर्मूल और मिथ्या सिद्धांतों ने बहुधा मनुष्यों को इतना कुमार्गगामी और पापों पर साहसी कर दिया है।

सी० ५ सू० निसाम आ० ११६

(६३) कुरान की शिक्षा है कि जब कुरान पढ़ा जाता है तो मुसलमानों और काफिरों के मध्य में खुदा एक परदा डाल देता है। जिससे कि काफिर कुरान को न सुन सकें और न समझ सकें। यह इस हेतु कि खुदा ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है और उनकी आंखों पर पर्दे डाल दिये हैं। भला यदि यही बात थी तो काफिरों को धर्म शिक्षा करने के लिये नबी क्यों भेजे और यदि काफिर लोग सत्य मार्ग पर न आवे तो उनका दोष ही क्या! महाशयगण! काफिर उसको कहते हैं कि जो निरर्थक बातों को ईश्वर की ओर से न माने। मैं बुद्धि विरुद्ध और सृष्टि नियम बिरुद्ध सिद्धान्तों और मौजजों पर हंसी तो नहीं उड़ाता हूं परन्तु अपने मुसलमान भाइयों के लिये बुद्धि और ज्ञान के लिये प्रार्थना करता हूं। आप मेरी प्रार्थना का साथ देकर तनिक आगे चलिये मैं आपको बतलाऊंगा कि कुरान उपरोक्त बातों के सिवाय 'सोशलिजम' के लिये कैसा पीछे पड़ा है। मस्ते नमून अज खरबारह (गोंन भरमें से एक मुट्ठी बानगी लेकर देखने से अच्छा बुरा विदित हो जाया करता है) देखिये।

सी० १५ सू० इस्राईल आ० ४५-४

(६४) कुरान की शिक्षा है कि मुशरिक और काफिर अपवित्र हैं उनसे मित्रता मत करो। यदि कोई उनसे मित्रता करेगा तो वह भी काफिर हो जावेगा और इसी कारण खुदा की अप्रसन्नता का भागी होगा। काफिर के अर्थ ऊपर बता चुका हूं। शोक है ! कि ऐसे बुद्धिमान और ज्ञानवान् पुरुषों को अशुद्ध समझा जावे। और फिर जंगल के खानेबदोश असभ्य और कुशील मनुष्य जो बुद्धि और ज्ञान से उल्लू की भांति रहित होकर प्रत्येक गप्प को ईश्वर की ओर से कही हुई अंगीकार कर लें उनको अत्यन्त शुद्ध माना जावे। कुरान की इस शिक्षा के अनुसार सब ईसाई, बौद्ध, आर्य, सिक्ख आदि जिनमें से प्रथम तसलीस (पिता पुत्र और पवित्र आत्मा) को मानते हैं। और सारे के सारे ही कुरान को न मानने वाले हैं अशुद्ध ठहराते हैं और दोजखी बनते है। केवल थोड़े करोड़े कुरानी ही बहिश्त के ठीकेदार हुए। यद्यपि ईसाई वा आर्य आदि ऐसे बहिश्त के भूखे नहीं हैं। परन्तु कुरान की यह शिक्षा क्या कभी प्राणिमात्र में भ्रातृभाव का प्रचार कर सकती है ? कदापि नहीं। किसी ने सच कहा है कि मुसलमान का हाथ प्रत्येक मनुष्य के विरुद्ध और प्रत्येक मनुष्य का हाथ मुसलमानके विरुद्ध रहेगा। मैं इस भ्रातृभाव फैलाने की शिक्षा की जड़ काटने वाले सिद्धान्त को किसी प्रकार ईश्वर की ओर से नहीं मान सकता।

सी० १० सू० तोबा: आ० ६१

(६५) कुरान की शिक्षा है कि काफिरों को जहां पाओ मार डालो क्योंकि कतल से कुफ्र बड़ा है। शोक है ! इस प्रकार की शिक्षा, शान्ति और चैन को कितनी हानिकारक है। इसी शिक्षा ने तो महमूद गजनबी को अमीनुल मिल्लत बनाया।

सी० २२ सू० अरवराब आ० ६१

(६६) कुरान की शिक्षा है कि लूट का धन खुदा और उसके रसूल का भाग है और खुदा को लूट के धन का पञ्चम भाग मिलना उचित है। भला जब खुदा ही लूट मार करने के लिये आज्ञा भेजे तो फिर महमूद का क्या दोष ? पर हे भाइयो ! मैं इस शिक्षा को बड़ी भयानक और नष्ट करने हारी समझता हूं। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को इससे बचावे।

सी० ९ सू० अनफाल आ० १-२

(६७) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमानी मत खुदा की ओर से है। मैं इस प्रकार तो इसलाम और कुरान को ईश्वर की ओर से अंगीकार करता हूं कि जिस प्रकार सब बुराइयां कुरानी खुदा की ओर से हैं वही उनका कर्त्तव्य है। सब कुमार्ग में चलाना कुरानी खुदा की ओर से है वह ही कुमार्ग में चलाने वाला है। सब पदार्थों का यहां तक कि शैतान का भी वही रचयिता है। अर्थात् शैतान भी ईश्वर की ओर से है। इस प्रकार मुसलमानी मत भी निस्सन्देह खुदा की ओर से हैं परन्तु उपरोक्त शिक्षा को देखकर मैं इसलाम को सच्चा धर्म नहीं कह सकता। यदि मैं ऐसा कहूं तो सत्य न्याय यथार्थ के गले पर छुरी फेरूंगा, और उरोक्त बातों के अतिरिक्त मैं निम्नलिखित बातों को जो स्त्रियों के साथ अन्याय के बर्ताव के विषय में हैं, छिपाऊंगा जो मैं कदापि नहीं कर सकता। महाशय गण ! इस अन्याय को भी प्रकट करें और देखिये।

सी० ३ सू० उमरान् आ० १९

(६८) कुरान की शिक्षा है कि स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं। जाओ उनके समीप जिस समय और जिस प्रकार चाहो। खेती किसानों और जमींदारों का धन होती है, स्त्रियों को धन कहा

गया है, और केवल विशेष भोग की तृप्ति का पदार्थं समझा गया है। पुरुषों के तुल्य इनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं है आगे देखिये।

सी० २ सू० बकर आ० २१६

(९९) कुरान की शिक्षा है कि यदि कोई स्त्री दुष्टकर्म करे तो उसको अत्यन्त पीटो और घर में कैद रखो यहां तक कि वह मर जावे। शोक ? स्त्री दुष्टकर्म करे तो उसको पति मारे, यदि पति दुष्ट कर्म करे तो उसको स्त्री क्यों न जूती लगाये और घर में यावज्जीवन बन्द रखे। यह केवल इस कारण कि स्त्री दासी की भांति धन मानी गई है।

सी० ४ सू० नसाय आ० १३

(१००) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान लोग स्त्री को तलाक दे सकते हैं। शोक है ! स्त्री कुरूपा हो, कन्या जने वा बुरी हो तो उसको तलाक दे दिया जावे किन्तु यदि पुरुष कुरूप हो, कन्या उत्पन्न करे और बुरा हो तो उसको तलाक न दिया जावे। तलाक का सिद्धान्त जहां स्वयं भ्रष्ट है वहां अपने फल के अनुसार भी बुरा है। तलाक का सिद्धान्त पति व पत्नी में सच्चे प्रेम को उत्पन्न नहीं होने देता। किस लिये कि स्त्री सर्वदा डरती रहती है न जाने उसको किस दोष पर तलाक दे दिया जावे। तलाक का सिद्धान्त बाजारी स्त्रियों की संख्या को बढ़ाने वाला है। तलाक का सिद्धान्त स्त्रियों को निर्मोह बनाने वाला है।

सी० २८ सू० तलाक आयत १-६

(१०१) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान लोग एक ही समय में दो दो, तीन-तीन, चार-चार, स्त्रियां विवाह सकते हैं।

भला फिर स्त्रियां एक ही समय में दो-दो तीन-तीन चार-चार पति क्यों न करें। ऐसा होता कि कुरान की बनाने वाली कोई स्त्री होती तो हम देखते कि स्त्रियां पुरुषों को तलाक देतीं, घर कैद रखतीं, एक साथ चार-चार पति करतीं। वह समय धन्य होगा, जब मुसलमानों की स्त्रियां शिक्षिता होकर दासत्व से मुक्त हो जावेंगी और पुरुषों की भांति सब अधिकार चाहेंगी। उस समय उनको कुरान को बन्द करके रखना पड़ेगा वा चार-चार पति करने का समय आयेगा।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०२) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान स्त्रियां परदा करें और चादर से अपने मुख को ढक कर बाहर जावें कि पर-पुरुष उनको न देख सकें वा वे अन्य पुरुष को न देख सकें। कोई कारण ज्ञात नहीं होता कि मुसलमान पुरुष क्यों न चादरों से मुख छिपाकर बाहर निकला करें कि कोई परस्त्री उनको न देख सके वा वह किसी परस्त्री को न देख सकें। क्या मुख के छिपाने से पवित्रता स्थिर रह सकती है, जब मनका परदा उठ गया हो। इसके सिवाय मुंह को कपड़े से छिपाकर सोना, चलना, फिरना, स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है। शोक है कि पुरुष आप तो खुले मुख स्वच्छ वायु सेवन करें और स्त्रियां बैल की भांति मुंह पर चादर और मुंहछींका डालने के लिये विवश की जावें।

सी० २२ सू० अखराब आ० ५६

(१०३) कुरान की शिक्षा है कि मुतबन्ना अर्थात् लेपालक पुत्र की स्त्री तुम्हारे लिये हलाल है। यह बात कितनी आक्षेपयोग्य है। माना कि मुतबन्ना स्वपुत्र नहीं है, पर फिर भी साधारण

सोशल मेल मिलाप के अनुसार माने हुए बेटे की स्त्री से विवाह करना कैसा अश्लील है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि किसी का मन किसी की स्त्री पर मोहित हो जावे और वह उस स्त्री को वश में न कर सके तो उसके पति को लोभ देकर कि हम तुमको अपनी सब सम्पत्ति का स्वामी बना देंगे, मुतबन्ना बना ले अर्थात् गोद लेले और फिर सहज जोड़-तोड़ करके स्त्री को उड़ा लिया जावे। यदि स्त्री सहमत न हो और कहे कि मैं तुम्हारी पुत्रवधू हूं। तुम मुझे बिना निकाह और बिना साक्षी के क्यों अपने व्यवहार में लातेहो तो तत्क्षण कुरानी आयत दिखाई जावे, कि देखो तुम हमारे लिये हलाल हो। अर्थात् तुम्हारे साथ विवाह करना दोष नहीं और काजी की साक्षी की आवश्यकता नहीं। खुदा ने स्वयं मेरा तुम्हारा निकाह कर दिया है। अत्यन्त शोक है ऐसी शिक्षा पर।

सी० २२ सू० अखराब आ० ३७

(१०४) कुरान की शिक्षा है कि दरिद्रता से मत डरो, निकाह अवश्य कर लो। खुदा तुम्हें धनाढय कर देगा। सम्भव है कि एक मनुष्य एक विशेष धनवती स्त्री के साथ विवाह करके धनाढ्य हो गया। पर क्या ऐसा भाग्य प्रत्येक मनुष्य का होता है? नहीं, फिर खुदा का दरिद्रता की दशा में निकाह की आज्ञा देने का क्या आशय है? यदि धनाढ्य बनने की यह खुदाई विधि है, तब तो अच्छी सरल रीति है। पर मैं मुसलमानों को उपदेश करता हूं कि वे ऐसा न करें जब कि वे स्वयं ही लंगड़े हों दूसरे लंगड़े को सिर पर न उठावें।

सी० १८ सू० नूर आयत ३२

(१०५) कुरान की शिक्षा है कि चचा और मामा आदि

समीप के कुटुम्बियों की कन्यायें तुम्हारे लिये हलाल हैं। अर्थात् उनसे विवाह करना दोष नहीं। इतने समीप के कुटुम्ब में विवाह करना मैं अश्लील समझता हूं। सहोदर भाई बहिनों की सन्तान एक दूसरे को भाई बहिन कहते फिरें और फिर एक निर्दिष्ट समय आ जाने पर वे पति पत्नी बन जावें। अरब निवासी आपस में एक दूसरे कबीले के साथ विरोध रखने के कारण कन्याओं को अपने ही कुटुम्ब में रखते थे और शत्रु के कुटुम्ब में कन्या देना अपमान जानते थे। पर भारतवर्ष में जहां अरब के असभ्य मनुष्यों की भांति अल्प मनुष्य संख्या के झोपड़े पृथक-पृथक न थे परन्तु वह बड़े-बड़े नगरों में जहाँ नाना कुटुम्ब जाति गोत्र के मनुष्य वास करते रहते हैं, इस नियम का चलाना उचित नहीं है। मैं उसको अश्लील जानता हूं।

सी० २२ सू० अखराब आ० ५०

(१०६) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान वा कुरानी चार से अधिक विवाह एक साथ नहीं कर सकते पर कोई कारण नहीं जान पड़ता कि जो ऐसा नियम बनावें वह अपने आपको क्यों पृथक् जानें और नौ स्त्रियां करे। मैं इस बात को नहीं मान सकता कि नियम बनाने वाला ही नियम को तोड़े। यदि नियम खुदा की ओर से है तो क्या कारण कि एक मनुष्य पृथक् कर दिया जावे? इसलिये मैं इस बात को न्यायानुकूल नहीं समझता हूं। केवल इसी बात को नहीं परन्तु उपरोक्त सब बातों को मैं दोष युक्त जानता हूं। ऐसी-बातों से ही तो विदित होता है कि कुरान कदापि ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता। केवल ईश्वरीय पुस्तक ही नहीं परन्तु वह एक न्यायशील बुद्धिमान मनुष्य की बनाई भी नहीं समझी जा सकती। प्रथम तो उपरोक्त सब

आक्षेप स्वयं इस बात को प्रतीत कर रहे हैं कि कुरान केवल यही नहीं कि ईश्वरीय ज्ञान से पतित है परन्तु वह एक मनुष्य कृत पुस्तक कहलाये जाने के भी योग्य नहीं है। पर तो भी मैं इस बात को और भी स्पष्ट रूप से आप लोगों से निवेदन करना चाहता हूं। निष्पक्ष और शिक्षित महाशय जो सत्य भागी हों, वे इस पर विचार करें।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०७) कुरान की शिक्षा है कि हे रसूल! (ईश्वर कहता है) हम तुमको यह गुप्त समाचार सुनाते हैं तू और तेरी जाति इससे अत्यन्त अज्ञात थे। महाशयगण! इस बही (ईश्वर की ओर से आज्ञा जो जबराईल द्वारा मुहम्मद साहब को आती थी) से पहले नूह इबराहीम आदि की कहानियों को वर्णन किया गया है, और इनको ईश्वरीय गुप्त समाचार कहा गया है क्या इनको अरब निवासी पहले नहीं जानते थे, बाइबिल के पढ़ने वाले अन्य मनुष्य भी इनको न जानते थे। यह सत्य है कि कुरान के उत्पन्न होने से पहले इबराहीम, नूह, मूसा आदि की सविस्तार कहानियां बाइबिल में लिखित थीं। फिर उसको गुप्त समाचार कहना और इलहाम का दम भरना सर्वथा भूल है। न जाने ईश्वर को बाइबिल का संक्षेप बनाने के लिये क्यों जबराईल के भेजने की आवश्यकता पड़ी। मैं बाइबिल को कुरान से अधिक प्रमाणित समझता हूं। परन्तु दोनों को ही

ईश्वरीय ज्ञान पुस्तक के पद से च्युत समझता हूं।

सी० १२ सू० हूद आ० ४६

(१०८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने उसको वही द्वारा अपने बन्द पर उतारा है। पर क्या खुदा और उसका जबराईल केवल मूसा, ईसा, इबराहीम, नूह, लूत आदि बाइबिली नाम ही जानते थे। क्या उनको भारतवर्ष के ऋषि-मुनि, पाण्डव, कौरव, रामचन्द्र और सीता, विक्रमादित्य, गौतम, बुद्ध, कणाद, पातञ्जलि आदि के नाम नहीं आते थे? और क्या यह सबके सब ईसा मूसा से कम थे? फिर वही शरीफ और कुरान शरीफ में उनका नाम क्यों न आया। सिकन्दर को तो जुलकरनैन (जिसका पूर्व से पश्चिम तक राज्य था और जिसने कुरान का कोष और हदीस एकत्र किये) के नाम से स्मरण किया है। पर चन्द्रगुप्त का नाम कहीं नहीं आया। मेरी तो यह सम्मति है कि न खुदा ने वही भेजी न जबराईल आया। रसूल खुदा ने अपनी सौदागिरी के दिनों में यात्रा करते हुए श्याम देश आदि के सूबों में जो नाना प्रकार की कहानियां यहूदी लोगों से सुनी सो उनको स्मरण रहीं और स्वप्न में वे ही दृष्टिगत हुई। यद्यपि इसमें भी अनेक भूल रह गई हैं, जो बाइबिल के देखने से साफ हो सकती थीं। इस कारण मैं इलहामी वा ईश्वर कृत पुस्तक नहीं मान सकता।

सी० १४ सू० नहल आ० १०१-१०३

(१०९) कुरान की शिक्षा है कि अहले किताब (ईश्वरकृत रसूल द्वारा आई हुई पुस्तकों के अनुयायी) ने जो यहूदी और निसारा आदि लोग हैं, इञ्जिल और तौरेत में कुछ अदल बदल कर दिया है। इञ्जिल और तौरेत के अतिरिक्त जबूर और अन्य पुस्तकों में नबियों का भी संक्षेप वृत्तान्त कुरान में आया है पर इसमें वेद-शास्त्र जिन्दावस्था आदि पुस्तकों का कहीं नाम नहीं आया। जिससे विदित होता है और सम्भव है कि यह पुस्तकें कुरान से पीछे बनी हों। यदि पहिले होतीं तो इञ्जील और तौरेत की भांति इनका भी कुरान में वर्णन होता, परन्तु यह कहना ऐसा ही है जैसा कि बाबर बादशाह औरंगजेब के पश्चात् उत्पन्न हुआ, नहीं वेद शास्त्र और जिन्दावस्था की पुस्तकें सहस्रों वर्ष कुरान से पहले से थीं। शेष रही यह बात कि कुरान में इनका कहीं वर्णन नहीं, इसका यह कारण है कि जिस बुद्धि से कुरान की उत्पत्ति हुई उस बुद्धि ने कभी वेद का शब्द नहीं सुना था। इस कारण अशक्त है!

सी० २६ सू० फतह आ० ३९

(११०) कुरान की यह शिक्षा है कि शपथ मत खाओ। परन्तु खुदा ने बही द्वारा कोहतूर, मक्का, जैतून, घोड़ा, हवाओं आदि की शपथ खाई थी। क्या कारण कि खुदा ने हिमालय एल्पस, विन्ध्याचल पर्वतों और भारतवर्ष के आडू, आलूचों सन्तरों और भैंस हाथी आदि की कहीं शपथ नहीं खाई? जिन पदार्थों की अरबी लोग प्रतिष्ठा करते थे और जिनकी वह शपथ खाते थे, उनकी तो शपथ खाई। परन्तु जो पदार्थ इनसे बढ़कर उत्तम थे, उनकी शपथ न खाई क्या कारण कि खुदा ने कुरान में किसी विशेष नदी की शपथ न खाई। यदि अरब में नदी नहीं थी तो गंगा ब्रह्मपुत्र, बालगा डेन्यूब, मसूरी, मिसीसिपी

एमेजन जैसी नदी उस समय खुदा को नहीं दीख पड़ती थीं। कहीं तो कुरान में कहा होता। शपथ है मुझे गंगा की, वा शपथ है मुझे मसूरी मिसीसिपी की वा शपथ है मुझे यमुना बालगा की, पर ऐसी शपथ नहीं है क्यों? इसका कारण कि जिस बुद्धि के भीतर से कुरानी शपथ निकली उसने गंगा, यमुना, बालगा, डेन्यूब काहे को देखे थे और काहे को मरुभूमि में उसने कोई नदी देखी थी। इस कारण मैं कुरान को केवल एक मनुष्य की बुद्धि की गढ़न्त मानता हूं।

सी० २६ सू० मुरसिलात आ० १-५

(१११) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने अनपढ़ों में अनपढ़ रसूल भेजा। तो क्या पढ़े-लिखे विद्वान् लोगों के लिये एक अनपढ़ की बात माननीय हो सकती है। और जिस पुस्तक में यह वर्णन हो कि सूर्य एक दल-दल में अस्त होता है, ईसा बिना बाप के उत्पन्न हो गया, लाठी का सांप बन गया इत्यादि-इत्यादि हम इस पुस्तक को माननीय समझ सकते हैं। कम से कम मैं तो एक यथार्थं माननीय मनुष्य रचित पुस्तक भी नहीं कह सकता, किस प्रकार इसको खुदा की पुस्तक कहूं। इस कारण मैं विवश हूं कि कुरान को ईश्वरीय पुस्तक न मानूं।

सी० २८ सू० जुमआ आ० २

(११२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने उसको अरबी भाषा में उतारा, यह इस कारण कि लोग उसको फारसी भाषा में होने पर यह न कह दें कि हम इसको नहीं समझ सकते। भला! क्या खुदा को ज्ञात न था कि अन्य मनुष्य जो अरबी नहीं जानते वह भी अरबों की सी ही शंका करेंगे अन्यथा हमको मानना पड़ेगा कि जिस समय कुरान भेजा गया उस समय जितने

मनुष्य संसार में थे उन सबकी अरबी भाषा थी, इस कारण उन सबको शिक्षा के लिये खुदा ने आदि में जब कि सब संसार में एक भाषा प्रचलित थी कुरान भेजा। परन्तु यह बात मान ली गई है कि आज से १३ या १४ सौ वर्ष पहले अरबी भाषा के साथ-साथ ग्रीक लैटिन आदि भाषायें प्रचलित थीं, कि जिनका अरबी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिये मैं इस बात को नहीं मान सकता कि ईश्वरीय पुस्तक जो साधारण मनुष्यों के उपदेश के लिये उतरे वह एक ऐसी भाषा में हो कि जिसको सिवाय कुछ जाति और जंगली भ्रमणकर्त्ताओं के कोई न समझ सकता हो। अतएव यह आवश्यक है कि खुदा के वाक्य आदि सृष्टि में ऐसी भाषा में हों जो सब भाषाओं को जड़ हो। कुरान इसमें नहीं है। इस कारण मैं उसको ईश्वर वाक्य नहीं मानता।

सी० २४ सू० हमसिजदा आ० ४४

(११३) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के वाक्य नहीं बदल सकते। यदि वाक्यों के अर्थ हम सृष्टि नियम के लें तो हम देखते हैं कि कुरान कैसी सृष्टि नियम विरुद्ध बातों और कपोल कल्पनाओं से भरा हुआ है। यदि वाक्यों के अर्थ केवल बातों या आयतों के लें तो भी हम देखते हैं कि एक आयत को बदल कर दूसरी आयत उतारी गई है। जैसा कि कुरान में इस बात का वर्णन है कि 'हम नहीं मनसूख (अन्यथा) करते किसी आयत को। पर यह कि उतारें इससे और अच्छी आयत, सत्यासत्य के निर्णय करनें वाले मनुष्य कितनी ही कुरानी आज्ञायें ऐसी देख सकते हैं कि जो पहले उचित समझी गई। फिर निषेध की गई। मदिरा का पहले निषेध नहीं किया किन्तु बहुत काल के पश्चात् निषेध किया। इसी प्रकार और कई बातें एक तरह

पाईं, पर फिर दूसरी भांति कर दी गई। यथा पहले बैतुल मुकद्दस फिर काबे की ओर मुंह करके नवाज पढ़ना, तो क्या खुदा की आज्ञा कुरान में अटल हुई ? कदापि नहीं। फिर मैं किस प्रकार मानलूं कि यह ईश्वर वाक्य है, जिसमें एक दिन के पश्चात् ही आज्ञा बदल दी जाती है।

सी० ७ सू० अनफान आ० ११३

(११४) कुरान की शिक्षा है कि मोहम्मद लोगों को जो काफिर नहीं कह दे कि वह और उनके पूज्यदेव कुरान जैसी पुस्तक लायें। यदि वह सच्चे हैं और निश्चय वह नहीं बना सकेंगे। निदान वे दोजख में डाले जायेंगे। महाशय गण ! क्या किसी पुस्तक के ईश्वर की ओर से होने का यह कोई प्रमाण है कि उसके समान कोई नहीं बना सकता ! कदापि नहीं। यदि यही बात हो तो सम्भव है कि शेक्सपेयर के सब नाटक और मेकाले के लेख जो अपने ढंग में सर्वथा निराले हैं, सब ईश्वर की ओर से ही समझने चाहिये और इसी प्रकार एक दूध पीते बच्चे की ऊटपटांग बातचीत भी जिसका अनुकरण कोई नहीं कर सकता, ईश्वर की ओर से होना चाहिये। क्या यदि कोई मनुष्य चील और कौवों की भांति कांय-२ का, बन्दर की भांति चिड़-२ अथवा चिड़ियों की नाईं चूं-चूं नहीं कर सकता तो उसके यह अर्थ होंगे कि वानर, कौवे और चिड़ियों सब खुदा की बोलियां बोल रहे हैं ! कदापि नहीं। इस बात को छोड़कर यदि यह कहा जावे कि कुरान की उत्तम भाषा की कोई समता नहीं कर सकता तो मैं पूछता हूं कि उत्तम भाषा किसको कहते हैं ? क्या यह कि एक ही कहानी को सैकड़ों बार दोहराया जावे और एक ही विषय को बारम्बार लाया जावे और एक ही बात

को दूसरी तीसरी बार लिया जावे और मकड़ी का शीर्षक देकर सिंह, भेड़िया इत्यादि का वृत्तांत लिख दिया जावे। मधुमक्खी का विषय लिखते समय बाबा आदम आदि की कहानियां सुना दी जावें। यदि वास्तव में उत्तम भाषा के यही लक्षण है तो निःसन्देह कुरान अद्वितीय है और इस जैसी न आज तक कोई पुस्तक बनी है और न कोई बुद्धिमान बना सकेगा! और उत्तम भाषा के इस अर्थ के अनुसार मेकाले ग्लेडस्टोन पिट जैसे योग्य वक्तृता करने वाले मनुष्य नितान्त मूर्ख और वक्तृता से रहित समझे जा सकते हैं। यदि उत्तम भाषा और सद्वक्तृता कोई और पदार्थ है और वास्तव में वह कुछ और पदार्थ है तो मेरी सम्मति अनुसार तो कुरान का पद सद्वक्ता के सबसे नीचे के भाग में रखना चाहिए जिससे कोई मनुष्य उसको पढ़कर सद्वक्तृता करने वाला होने की चेष्टा न करे। मुझे जान नहीं पड़ता कि खुदा ने क्यों एक ही बात को बारम्बार दोहराने के लिए जबराईल को थकाया। केवल यह कह देना उचित था कि बाबा आदम की कहानी को बीसबार, इबराहिम की कहानी को पन्द्रहबार और बहिस्त के किस्से को एक कम अस्सीबार लिख लो, चलो जी छुट्टी हुई। भाई! मेरी बुद्धि इस बात को कदापि अंगीकार नहीं कर सकती कि कुरान स्वयं रसूल खुदा का अद्वितीय मौजजा या ईश्वरकृत पुस्तक है।

सी० १ सू० बकर आ० २३

(११५) कुरान की शिक्षा है कि हे रसूल! तू लोगों को सुना दे कि यदि कुरान खुदा की ओर से न होता तो उसकी बातों में भेद पाया जाता।

महाशयगण! विचारिये 'कुन्' का दम भरना परन्तु फिर

भी छः दिन में पृथिवी और आकाश का बनाना, मां और बाप के वीर्य से मनुष्य की उत्पत्ति की शिक्षा पर आदम को बिना मां बाप के और हजरत ईसा को बिना बाप के उत्पन्न करना ! ला तबदीला ले कल्मतिल्ला:'(खुदा के नियम बदल नहीं सकते) का दम भरना, किन्तु फिर भी लाठियों के सांप बनाना और पत्थरों में से ऊंटों का उत्पन्न करना, खुदा का पवित्र होना, किन्तु फिर भी उसका मक्कार फरेबी लड़ाका कुमार्ग पर चलाने वाला, विघ्नकर्त्ता होना आदि बातें कैसी एक दूसरे के विरुद्ध हैं। निदान कुरान एक मनुष्य रचित पुस्तक है। खुदा और बही का बदनाम है। शोक कुरान में भीतर तो वह बारूद भरी हुई है कि जिससे वह उड़ रहा है। सच है यह मिसरा "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से"।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८२

(११६) कुरान की शिक्षा है कि वह लोगों के लिए उपदेश है। मैं पूछता हूं कि खुदा के वाक्य और वह भी लोगों के उपदेश के लिये, परन्तु उनमें मुअम्मों (रहस्यों) और पहेलियों का क्या तात्पर्य ! अब तक बड़े-२ भाष्यकार और वक्ता ही नहीं किन्तु रसूल खुदा के असहाब (बन्धु) भी प्रयत्न कर चुके हैं, पर कुरान के हरूफमुक्तअका आशय किसी की बुद्धि में नहीं आया। अन्त में कहना पड़ा कि यह एक भेद है जिसको खुदा ही जानता है। भला बताइये उपदेश तो लोगों के लिये पर भेद किस के लिये ? लिखे मुसा, पढ़े खुदा ! इसके अतिरिक्त कितनी ही

आयतें ऐसी हैं कि जब तक आप तफसीर (व्याख्या) और हदीस (मुहम्मद के वचन) को लेकर न बैठें टक्करें मारिये पर आशय समझ में नहीं आवेगा ! हण्डे का एक सीतमात्र की नाईं देखिये "अलम्ता: कैफा फअला रब्बो का बअसहा बिलफल" (सिपार: ३० सूरतुलफील) क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे खुदा ने हाथी वालों के साथ क्या किया ! इन्नशाने अकहुमल अवतर (सिपार: ३०) तेरी बुजर्गों की कसम की वह मनुष्य दुर्दशा में है आदि २ सहस्त्रों आयत हैं। हदीस को अलग रखिये। तफसरिको दूर रख दीजिये और फिर कोई मनुष्य बताईये कि 'असहाबफील और अब' क्या भेद है मेरी अनुमति में ऐसी पुस्तक की जिसके विषय को जानने के लिये मनुष्यकृत पुस्तकों की आवश्यकता पड़े पूर्ण और ईश्वरकृत नहीं हो सकती।

सी० ११ सू० यूनस आ० ४७

बात बढ़ी जाती है इसलिये इसको छोड़कर मैंने उपरोक्त कुछ कारण मुसलमानी मत छोड़ने के विषय में वर्णन कर दिये है। शेष यह बात कि वेदोक्त धर्म में मुझे क्या भलाई दीख पड़ी इसके लिये पृथक् व्याख्यान की आवश्यकता है। यहां पर केवल इतना ही कह देना उचित समझता हूं कि वेदोक्त धर्म कुरानी खुदा और शैतान के झगड़े, बाबा आदम और हव्वा (आदम की स्त्री) की कहानी, धिनौने बहिश्त और डरावने दोजख तो-बाह इस तगफ्फार शफअत हश्र नश्र हिसाब किताब तराजू पलड़ा फरिश्ते जिन्न मांसाहार पशु वध, पत्थरों के चूमने, मकान के चारों ओर घूमने, दिन ही में भूखा रहने रात को नियम विरुद्ध खाने, खुदा की इबादत (पूजा) में टांग हाथ पांव हिलाने उठवे

बैठने स्त्रियों पर बलात्कार करने, मिथ्या बातों को न मानने वालों को, उच्च जीवन व्यतीत करने वालों को काफिर कहने, उनसे घृणा करने, लड़ने भिड़ने लूटने खसोटने बन्दी करने खुदा के साथ किसी दूसरे को शरीक करने आदि-२ सर्व मिथ्या बातों से रहित है। कदाचित् कोई मनुष्य यहां पर पुनर्जन्म और नियोग के सिद्धांत को पेश कर दे। मैं पुनर्जन्न को न्याय का मूल और नियोग को व्यभिचार के निर्मूल करने हारा समझता हूं। यदि पुरुष और स्त्री पूर्ण ब्रह्मचर्य के स्टेज के भीतर से होकर अपने आप को नियोग का अधिकारी बना सकें तो संसार में से व्यभिचार अपने घृणित और भयानक परिणाम सहित लोप हो जावे। निःसन्देह नियोग उस समय का स्मारक है जब कि स्त्री को खेती, गुलाम सम्पत्ति समझने के स्थान में अर्धांगी समझा जाता था और जब स्त्री और पुरुष का परस्पर से संबंध करना विशेष भोग की तृप्ति के लिए नहीं छूटता था, परन्तु शोक है! मनुष्य जितना विषय भोग का वशीभूत होता गया, स्त्री जाति के अधिकार न्यून होते गये। यहां तक कि आज कल उसकी प्रतिष्ठा बहुधा मनुष्य में एक गाय, भैंस, भेड़ बकरी के समान रह गई, कि जिसको जब चाहा अपने घर से निकाल बाहर फेंक दिया और दूसरी गाय ले ली। ऐसे लोगों के सम्मुख यदि हम विषय भोग की अन्धेरियों से पड़ी हुई मिट्टी के सब पर्त हटाकर स्त्री पुरुष के परस्पर के सम्बन्ध उसके निमित्त कारण को स्पष्ट रूप से वर्णन करके नियोग विषय दिखावें भी तो सब चिल्ला उठेंगे "व्यभिचार! व्यभिचार!! व्यभिचार!!! निःसन्देह वह देश और वह जाति और उस देश और उस जाति के वह पुरुष और वह स्त्रियां जो ब्रह्मचर्य का नाम भी न जानती हो और जिनके लिये वर्षों तक पूर्ण

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी रहकर विद्योपार्जन करते हुए सब विषय भोग छोड़ इन्द्रियों को वश में करना और फिर उसके पश्चात् केवल वंश रक्षा के लिये परस्पर विशेष सम्बन्ध करना असम्भव हो गया हो, वह यदि नियोग को व्यभिचार कहें तो ठीक है और वे विवश हैं पर मैं इससे यह परिणाम नहीं निकाल सकता कि इस विषय में किसी सोसाइटी की पतित दशा होने के कारण नियोग के सिद्धांत (पर अमल) का प्रचार नहीं हो सकता, तो वह सिद्धांत ही अशुद्ध हुआ नहीं, सोसाइटी किसी उच्च वा पवित्र सिद्धांत को निर्बलता व मूर्खता के कारण भुला सकती। पर समय आने पर विशेष साधनों के उत्पन्न हो जाने से जब वह निर्बलता और मूर्खता दूर हो जाती है तो वह सिद्धांत ऐसे ही प्रकाश से दीप्तमान् होने लग जाता है, जैसा आर्यावर्त्त की लाखों वर्षों से पत्थरों के नीचे छिपी हुई यथार्थ ईश्वरीय विद्या का सूर्य कि जिसको ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने स्वार्थी लोगों के हाथों में बन्द वेदों के भीतर से ऐसी शोभा के साथ प्रकट कर दिया कि जिसकी किरणों से आर्यावर्त्त निवासी ही नहीं चोंधिया गये, वरन् सहस्रों मील के अन्तर पर अमेरिका में बैठा हुआ एनड़ो जेक्सन भी चकित हो गया। इस कारण जिस प्रकाश से पत्थर-२ दीखने लगे और जिस प्रकाश को पाकर सहस्रों मनुष्य मुंह से हड्डियों को गिराकर क्रूरता से निकल आये उसी प्रकाश ने नियोग के सिद्धांत का भी प्रकाश किया कि जिसके लिए आज कल चारों ओर से कतिपय हिन्दू मुसलमान सिक्ख, भाई वह शब्द नियत कर रहे हैं, जो मेरे विचार में आज कल के कुछ निकाह वा विवाह पर घटना उचित है क्योंकि वह पुरुष और वह स्त्री जो पूर्ण ब्रह्मचारी न रहकर इन्द्रियों को दमन नहीं कर सकते वे

निकाह वा विवाह तो वर्तमान प्रथानुसार निःसन्देह कर सकते हैं पर नियोग नहीं कर सकते, यदि करें तो महान् पाप के भागी होंगे। क्योंकि नियोग वह पवित्र सिद्धांत है कि जिसके नियमों का पालन करना साधारण मनुष्य का कार्य नहीं है।

अन्त में मेरी अन्तःकरण से प्रार्थना है कि पक्षपात हठ धर्मी के पर्दों को चीर कर तहकीकात (सत्य निर्णय करने का विचार) का स्वभाव सबमें उत्पन्न हो जो बुरे सिद्धांत हैं उनको छोड़ने और जो अत्युत्तम सिद्धान्त हैं उनको स्वीकार करने की सामर्थ्य मेरे अन्य हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, भाइयों को भी प्राप्ति हो। तथास्तु ॥

(नोट) इन सूचनाओं के अतिरिक्त जो कि समीक्षाओं के साथ दी गई हैं अन्य भी कितने ही स्थानों में इन विषयों के कुरान में वृत्तान्त है, जो विस्तार के भय से छोड़ दिये गये हैं।